कल हमारा है

(बिहार राज्य **कुर्मी** चेतना महारैली से
बिहार राज्य **लव-कुश** कन्वेंशन तक का दस्तावेज।
साथ ही **कुर्मी-कुशवाहा** मतदाताओं के क्षेत्रवार आंकड़ें)

- **सिद्धेश्वर**

लेखक	:	सिद्धेश्वर
जन्म तिथि	:	18 मई, 1941 ई०
जन्म स्थान	:	ग्राम+पत्रा०-बसनियावाँ,नालन्दा
पिता	:	श्री इन्द्रदेव प्रसाद
माता	:	श्रीमती फूलझार प्रसाद
शिक्षा-दीक्षा	:	प्रारम्भिक शिक्षा गाँव के विद्यालय तथा मध्य विद्यालय खरथूआ (नालन्दा) में । 1956 ई० में चौधरी उच्च विद्यालय, हुसेनपुर (नालन्दा) से प्रवेशिकोतीर्ण, 1958 तथा 1960 ई० में क्रमशः आई ए० एवं बी० ए० पटना कॉलेज, पटना, 1962 ई ० में श्रम एवं समाज कल्याण विषय में एम ए० पटना विश्वविद्यालय, पटना, 1973 ई० में विभागीय प्रतियोगिता परीक्षा एस० ए० एस० उत्तीर्ण ।
सम्प्रति	:	भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग के कार्यालय, महालेखाकार (लेखा परीक्षा) बिहार, पटना में लेखा परीक्षा अधिकारी के पद पर कार्यरत, प्रचार सचिव, बिहार, अ० भा० कुर्मि-क्षत्रिय महासभा, संयुक्त मंत्री, बिहार राज्य कुर्मी सभा, संयोजक, राष्ट्रीय विचार मंच, बिहार, पटना ।
अभिरूचि	:	सामाजिक तथा साहित्यिक गतिविधियों में गहरी अभिरूचि । पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन-संयोजन एवं मंच-संचालन
सम्मान	:	भारतीय दलित साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा "डा० अम्बेदकर फेलोशिप" से सम्मानित ।
रचनाएँ	:	गद्य पद्य दोनों विधाओं में साहित्य सृजन, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर रचनाएँ प्रकाशित । 1991 ई० में 'आरक्षण' नामक आलोचनात्मक पुस्तक प्रकाशित । 1993 ई० में 'बिहार के कुर्मी' परिचयात्मक निबंध संग्रह एवं 'बिहार के कुर्मी' निर्देशिका प्रकाशित । 1994 ई० में 'कल हमारा है' पुस्तक प्रकाशित । इनके सम्पादन-संयोजन में 'डा० मोहन सिंह अभिनन्दन ग्रन्थ' प्रकाशनाधीन ।

कल हमारा है

(बिहार राज्य **कुर्मी** चेतना महारैली

से बिहार राज्य **लव-कुश** कन्वेंशन तक का दस्तावेज ।

साथ ही **कुर्मी-कुशवाहा** मतदाताओं के क्षेत्रवार आंकड़ें)

सिद्धेश्वर
एम० ए०, एस० ए० एस०

सरदार पटेल साहित्य प्रकाशन
'बसेरा' पुरन्दरपुर
पटना - 800 001
(बिहार)

© प्रकाशकाधीन

लेखक : **सिद्धेश्वर**

प्रथम संस्करण : **अक्टूबर, 1994**

प्रकाशक :
सरदार पटेल साहित्य प्रकाशन
'बसेरा', पुरन्दरपुर
पटना - 800 001, (बिहार)
दूरभाष : 228519

लेजर कम्पोजर :
कोरल कम्प्युटर प्रिन्ट
पंजाब सिंध बैंक के पीछे
फ्रेजर रोड, पटना - 1

मुद्रक :
वैशाली प्रिन्टर्स
श्री कृष्णपुरी, पटना-1
दूरभाष : 220569

अधिकृत वितरक :
रामप्रताप सिंह
'सरस्वती सदन', जयप्रकाश नगर
पटना गया लाईन, वासोन्ती प्रेस के पास
पटना - 800 001(बिहार)

मूल्य : **दस रूपये**

प्रस्तावना

सरकारी सेवा और साहित्य-सृजन में रत होते हुए भी अपने सामाजिक दायित्व से हम कभी विमुख नहीं होते क्योंकि हमारी सामाजिक प्रतिबद्धता ने सदैव हमें स्वार्थ से परे रखा है । समाज से जो कुछ हम अर्जित करते हैं उसे दूसरों के बीच बाँटने की लालसा भी हमारे मन में बराबर रहती है और इसी लालसा ने हमें प्रेरित किया महारैली पर कुछ लिखने को । प्रस्तुत संग्रह में सामाजिक दायित्व का बोध सर्वत्र सुलभ है । महारैली तथा कन्वेंशन का आँखों देखा हाल संजोने का भरसक सार्थक प्रयास किया है मैंने इस दस्तावेज में । साथ ही समाज की समस्याओं तथा महारैली की आवश्यकता पर न केवल विचार हुए हैं वरन् उनके समाधान पर भी नजर गई है ।

आम तौर पर होता यह है कि भव्य आयोजन के कार्यक्रमों को स्मारिका में समेटकर उसे वर्त्तमान तथा भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा के श्रोत के रूप में रखा जाता है किन्तु वैसा कुछ हो नहीं पाया इस ऐतिहासिक महारैली के वक्त । स्मारिका के अभाव ने भी मुझे प्रेरित किया इस दस्तावेज को आप के समक्ष परोसने को । महारैली तथा कन्वेंशन के तथ्यों से अवगत कराना तथा उसे सहेज कर रखना ही इस संग्रह का उद्देश्य है ।

पुस्तक के अन्त में बिहार के संसदीय एवं विधान सभा निर्वाचन क्षेत्रों में कुर्मी-कुशवाहा मतदाताओं के क्षेत्रवार आँकड़े प्रस्तुत किए गये हैं जो सम्भवत: मानसिक खुराक के साथ-साथ समाज के नेताओं, कार्यकर्त्ताओं तथा मतदाताओं के लक्ष्य के रास्ते में रोशनी का काम करें ।

सहज-सरल और पूर्वाग्रह मुक्तशैली में तथ्यों को रखने का हर सम्भव प्रयास मैंने किया है । कहीं भी किसी वाद, किसी नाम या किसी विचार धारा के बोझ को मैंने अपनी कलम पर नहीं लादा है । प्रत्येक तथ्यों को, प्रत्येक वस्तु को, प्रत्येक कार्यवाही तथा कार्यवृत को बिना किसी चश्में के उसके मौलिक स्वरूप में देखने का प्रयत्न किया गया है, चाहे वह चेतना महारैली हो या चेतना कन्वेंशन । सम्भव है दस्तावेज में किसी सक्रिय कार्यकर्त्ता अथवा पदाधिकारी का

नाम नहीं आ पाया हो, इसमें मात्र स्मरण को ही दोषी ठहराया जा सकता है, मेरी नियत को नहीं ।

कुर्मी तथा कुशवाहा समाज की स्थितियाँ और चुनौतियाँ लगभग एक-सी हैं । इसलिए दोनों की समस्याओं पर दृष्टि डाली गयी है और दोनों की एकता पर बल दिया गया है क्योंकि सामाजिक-राजनीतिक संगठनों के तनाव-खिचांव में उसके सदस्य और उनकी मूल समस्याएं कल के सुबह की आस और तलाश में है । इसलिए समय के बदले सच को स्वीकार कर दोनों को नए बिहार के निर्माण में जुट जाना ही आज का सच है ।

यह दस्तावेज वास्तव में एक सामाजिक-आत्म स्वीकृति है, मैं मात्र एक माध्यम हूँ । मेरी उस दिन की मन:स्थिति की कल्पना मात्र ही आप कर सकते हैं यदि मैं सच कहूँ कि नई दिल्ली स्टेशन पर इस पांडुलिपि की मूल प्रति खो गयी । पर मेरी प्रबल इच्छाशक्ति तथा कविवर दयानन्द बटोही की प्रेरणा ने मुझे इसे पुन: लिखने को मजबूर किया ।

दस्तावेज तो पूरा हो गया पर इसे कहाँ और कैसे छपाया जाय , कुछ दिन उसी सोच में व्यतीत हो गए । फिर मुझे लगा कि नहीं यह मेरा सामाजिक दायित्व है जिसका निर्वाह हर कीमत पर होना चाहिए । न जाने कितने आत्मीय मित्र हैं जो अनजाने ही प्रेरित कर गए इसके लेखन, प्रकाशन में । उन सबों का मैं आभारी हूँ । कविवर गोपी वल्लभ सहाय के बहुमूल्य सुझावों के लिए मैं कृतज्ञ हूँ उनका ।

मनोज कुमार, संजय कुमार मंगलम्, शिव कुमार सिंह तथा **कोरल कम्प्युटर प्रिन्ट** के भाई सुतेन्द्र कुमार धन्यवाद के पात्र हैं जिनका सहयोग कारगर हुआ । वैशाली प्रिन्टर्स के भाई सुभाष चन्द्र सिंह के सहयोग के लिए मैं उनका अभारी हूँ ।

इस दस्तावेज के बारे में पाठकों की धारणाएं क्या हैं, उनकी प्रतिक्रियाओं और पत्रों की मुझे बेसब्री से इन्तजार रहेगा ।

❐ सिद्धेश्वर

'बसेरा'
पुरन्दरपुर, पटना ।

समर्पण

स्व० गुलाबी देवी

स्नेहमयी मातृतुल्य भाभी

को

जिनके आँचल ने मुझे न केवल

शीतल छाया प्रदान की

वरन्

जिनसे सामाजिकता की प्रेरणा मिली ।

अनुक्रम

		पृष्ठ सं०
1.	महारैली की आवश्यकता आखिर क्यों ?	7-15
2.	बिहार राज्य कुर्मी चेतना महारैली का आयोजन	11-17
3.	रथ-यात्रा	18-19
4.	महारैली के कार्यवृत	20-26
5.	महारैली में पारित प्रस्ताव	27-28
6.	महारैली की झलकियाँ	29-32
7.	महारैली पत्र-पत्रिकाओं की नजर में	33-39
8.	बिहार राज्य कुर्मी चेतना कन्वेंशन	40-43
9.	बिहार राज्य लव-कुश कन्वेंशन	44-49
10.	लव-कुश कन्वेंशन में पारित प्रस्ताव	50-51
11.	अब आगे क्या करना है	52-62
12.	कुर्मी-कुशवाहा मतदाताओं के क्षेत्रवार आँकड़े	63-70

महारैली की आवश्यकता आखिर क्यों ?

परिवर्त्तन का दौर

देश-विदेश की राजनीति, अर्थव्यस्था तथा उसके तनाव बिन्दुओं के बारे मे लम्बी चौड़ी बात सोचने वाले इस कुर्मी एवं कुशवाहा समाज को कभी अपने बारे में भी सोचना आवश्यक हो गया है कि वह आजकल किन परिवर्त्तनों से गुजर रहा है । उन परिवर्त्तनों के कारण कितने तनाव उन पर हावी हैं । किन संकटों को झेलता हुआ वह आगे बढ़ रहा हैं । अगर इस समाज ने इतिहास बनाने का गर्व कई बार संजोया है तो उसे एक जिंदा समाज ही होना चाहिए और वह जिंदा समाज ही होता है जो संकटों से जुझता है, दबावों से टकरराता है और लगातार वह परिवर्त्तन में रहता है । इसलिए आज आवश्यकता इस बात की है कि यह समाज अपने परिवर्त्तन के हर आयाम को भलि-भाँति समझे,और उसके कारण, परिणाम के ग्राफ को अपनी चिन्ता का विषय बनाए । इसके लिए ही कुशवाहा और कुर्मी चेतना महारैली तथा कन्वेंशन ।

समाज जब बड़े काम कर रहा होता है, ऐतिहासिक उपलब्धियां कर रहा होता है, परिवर्त्तन के विराट् सपने बुन रहा होता है, वह उस वक्त बड़े तनावों से भी गुजर रहा होता है, ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति जब बड़े सपने को साकार करने की उत्कंठा में जी रहा होता हैं तो वह भी उस वक्त तनावों के किसी अभूतपूर्व दौर से गुजर रहा होता है ।

पिछले पन्द्रह वर्षो में समाज को बदलने की उत्कंठा अत्यन्त सीमित रूप मे दिखाई दी है और उसमें विकास की तुलना में ठहराव,नींद और जड़ता का आलम ज्यादा रहा है किन्तु आज इस परिवर्त्तन के दौर में उस जड़ता को समाप्त करने की आवश्यंकता है और इसलिए महारैली का सहारा लेना पड़ा ।

स्वतन्त्रता-संग्राम में अहम भूमिका के बावजूद उपेक्षित

इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि आज़ादी के बाद पूरे दलित, पीड़ित, शोषित एवं अत्यन्त पिछड़ों के साथ इस लव-कुश समाज को भी हाशिया

पर रखने की कोशिशें अमल में लाई गई यद्यपि इस समुदाय के लोगों ने स्वतंत्रता-संग्राम में अग्रणी भूमिका निभाई। इसका अतीत गौरवमय रहा है। छत्रपति शिवाजी महाराज ने भारतीय समाज की संस्कृति की रक्षा के लिए साहसिक कदम उठाया। लौह-पुरूष सरदार पटेल ने तो सैकड़ों देशी रियाशतों को अखण्ड भारत में मिलाकर जिस सूझ-बूझ का परिचय दिया वह आज भी अविस्मरणीय है। महात्मा ज्योति बा फूले ने समाज सुधार के कार्यो में क्रांतिकारी योगदान दिया। पटना सचिवालय के सामने स्थित शहीद स्मारक के जिन सात नौजवान छात्रों ने महात्मा गाँधी के 'भारत छोड़ो' आह्वान पर सन् 1942 मे हँसते-हँसते भारत की बलिवेदी पर अपने प्राणों को न्योछावर किया उनमें शहीद रामानन्द सिंह, शहीद राजेन्द्र सिंह तथा शहीद रामगोविन्द सिंह तीनों कुर्मी समाज के थे। इनक अतिरिक्त हजारों स्वतन्त्रता सेनानियों की कहानी लोगों की जुबान पर है। पर इतनी कुर्बानियों के बाद उसे मिला क्या?

दरअसल आजादी के बाद से ही सत्ता के हुकमरानों ने अपने लुभावनों नारों से पिछड़ों और दलितों का इस्तेमान कुर्सी हथियाने के लिए ही किया। कभी भी सवर्ण नेताओं ने दिल से नहीं चाहा कि महत्वपूर्ण पदों पर इस वर्ग का कोई नेता बैठे और सत्ता जब पिछड़ों के हाथ आई तो उन महत्वपूर्ण पदों पर अपनी ही जात-बिरादरी वालों को तरजीह दिया। इतिहास में हुए अन्याय का प्रतिकार करने के नाम पर जो लोग सत्ता में आये, वे खुद ही अन्याय का झंडा बुलन्द करने लगे। समय-समय पर देश में उमड़ती हलचलों, निरन्तर घोषणाओं, आश्वासनों के बावजूद सदियों से उपेक्षित शोषित, दलित एवं पिछड़े समुदाय को सत्ता की न्यूनतम भागीदारी भी नहीं मिली। यही कारण है जिससे कुशवाहा एवं कुर्मी समाज में चेतना महारैली की प्रेरणा मुखर हुई। इस मुखरती तीव्रता ने न केवल कुर्मी एवं कुशवाहा समाज को वरन् सभी उपेक्षित वर्गों को अपनी अस्मिता की पहचान के लिए प्रेरित किया।

आज समाज का प्रत्येक तबका, प्रत्येक व्यक्ति संविधान के मूलभूत अधिकारों की माँग कर रहा है, अबतक ये मूलभूत अधिकार अधिकांशत: संविधान के पन्नों तक सीमित रहे और कुछ ही लोगों को, एक वर्ग विशेष के लोगो को ये अधिकार वास्तव में मिले। समाज का वर्त्तमान ढाँचा इस माँग को पूरा करने में सक्षम नहीं है। इसलिए सारा ढाँचा चरमराता दिखाई दे रहा है। अब केवल वोट देने की स्वतन्त्रता नहीं, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्वतन्त्रता भी चाहिए। उसे बराबरी का हक भी चाहिए, कोरा आश्वासन नहीं। ठोस बराबरी जिसे वह महसूस कर सके। उन्हें अब लगातार एक सीधी और स्पष्ट भागीदारी

का हक चाहिए । लोकतंत्र के मशीनरी के मार्फत अनुदान, छूट अथवा अनुग्रह राशि का झुनझुन्ना वे नहीं चाहते उन्हें इंसानी गरिमा और लोकतान्त्रिक प्रतिवाद का हक चाहिए जिसका सपना उनके बुजुर्गो ने अगस्त, 1942 में देखा था ।

इसके अतिरिक्त समाज बन्धुत्व के साथ-साथ अंशत्व का बोध भी चाहता हैं । इसी अशंत्व के बोध का नाम अस्तित्व है । आज समाज में दोहरी जिन्दगी जी रहे लोगों के चरित्र में रूढ़ियों, अन्ध-विश्वासों, आशिक्षा, ठगे जाने की विवशता तथा अन्य प्रकार की सामाजिक दैन्यताओं की भरमार ने उन्हें मजबूर किया है कि वे अपने बारे में सोचें, विचारें और खुद को सवारें । अन्यथा वह जो सत्ता के शिखर पर बैठे हैं, आजादी का फल चखते रहेंगे और आजादी की लड़ाई में असली भूमिका अदा करनेवाले उसके लाभ से वंचित ही रहेंगे । समाज उस लाभ से वंचित न रहे, इसके लिए महारैली का आयोजन किया गया ।

आरक्षण का गहराता सवाल

निःसन्देह न्याय के बिना सजीव समाज की कल्पना नहीं की जा सकती और समाज में नैतिक मानवीय शक्तियों का विकास जबतक नहीं होगा, सत्य को प्रतिष्ठा जबतक नहीं मिलेगी, तब-तक समाज में न्याय-व्यवस्था की सुरक्षित स्थिति नगण्य होगी ।

आरक्षण का यह सवाल पेट का नहीं, प्रतिष्ठा का मामला है । आरक्षण पिछड़े एंव दलित वर्गों के आर्थिक उत्थान का जरिया नहीं है, बल्कि सदियों से पीड़ित और प्रताड़ित लोगों को सामाजिक सम्मान दिलाने का औजार है । आरक्षण के कारण जो नौकरी किसी को मिलती, आरक्षण के अभाव में अगर वह उसको नहीं मिलेगी, तो भी वह उसका विकल्प किसी दूसरे आर्थिक श्रोत के रूप में ढूँढ़ लेगा । परन्तु भारतीय समाज में सरकारी नौकरी के कारण सामाजिक रूतबे का जो भाव जुड़ा हुआ है और कुछ सामाजिक वर्गों को अनेक कारणों से इस रूतबे की अनुभूति से वँचित होना पड़ा है, ऐसे तबके को आरक्षण के द्वारा नौकरियाँ और सामाजिक सम्मान दिलाना निहायत जरूरी है ।

पिछले वर्षों में संयोग वश कुछ ऐसा हुआ कि कुर्मी समुदाय को जान बूझकर या किसी साजिश के तहत बिहार सरकार या केन्द्र सरकार की नौकरियों में जब आरक्षण का सवाल उठा तब सबसे पहले 1991 में उसे आरक्षण की सूची में नहीं रखा गया । जब समाज के लोग आन्दोलित हुए और जब गोलबन्द होना प्रारम्भ किया तब बिहार सरकार के द्वारा अफरा-तफरी में कुर्मी को आरक्षण की

सूची में शामिल कर लिया गया ।

फिर जब बिहार के पंचायती चुनावों में आरक्षण की बात आई तब बिहार पंचायती राज अधिनियम 1993 की अनुसूची-1 में पिछड़ी जातियों की सूची में इसे छोड़ दिया गया । मात्र छोटानागपुर क्षेत्र के कुर्मी महतो को क्रम संख्या 13 पर लिखा गया । इस पर कुर्मी समुदाय के सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने सत्ता के दरवाजे खटखटाये । तेरह दिसम्बर, 1993 को पटना गाँधी मैदान के जे० पी० गोलम्बर पर एक एतिहासिक धरना आयोजित कर सरकार का ध्यान आकृष्ट कराया गया । उसके बाद भी जब बात नहीं बनते दीख पड़ी तब उस समुदाय के नौजवान तथा छात्र वर्ग सड़क पर उतरने को बाध्य हो गये और संघर्ष का रास्ता अपनाया । विरोध में सड़कें जाम की गई, रेल-सेवा बाधित हुई ।

इसी बीच केन्द्रीय सेवाओं में आरक्षण पानेवाली पिछड़ी जातियों की सूची में जब कुर्मी (अनुसूची-2) को शामिल नहीं किये जाने अथवा कुर्मी या कुर्मी (महतो) शब्द को लेकर जो बाबेला मचा, उसने भी इस समुदाय को आन्दोलित किया । अतएव आरक्षण के सवाल ने भी पूरे समुदाय का ध्यान आकृष्ट किया और यह महारैली का एक मुद्दा बना ।

सामाजिक चेतना का अभाव

किसी भी स्वस्थ समाज के निर्माण में सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना आवश्यक है । कुर्मी एवं कुशवाहा समाज में इन दोनों का अभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है । हालांकि यह भी सत्य है कि विभिन्न सामाजिक संगठनों के द्वारा सामाजिक चेतना जागृत करने का प्रयास होता रहा है, जन-मानस को आन्दोलित करने तथा कुरेदने में स्वयं-सेवी संस्थाओं की भूमिका रही है, फिर भी सामाजिक कुरीतियों पर विजय पाने में समाज सक्षम नही हो पाया है ।

कुर्मी तथा कुशवाहा समाज का सच यह है कि वह शाखावाद में उलझा है । न केवल इन में शाखा-प्रशाखा का भेद-भाव है वरन् ऊँच-नीच का भेद-भाव भी मौजूद है । शाखान्तर शादी का प्रचलन अभी तक जोर-शोर से नहीं हो पा रहा है । कारण कि हर शाखा अपने आप में सिमटा नजर आ रहा है । यही वजह है कि इस समाज में अगड़े पिछड़े का भेदभाव बरकरार है । इसके अतिरिक्त अशिक्षा, आडम्बर, तिलक-दहेज में अपार वृद्धि, रूढ़िवादिता, अंध-विश्वास, बाल-विवाह, विधवा-विवाह का न होना आदि जैसी सामाजिक कुरीतियों ने समाज को धर दबोचा है जिससे पिंड छुड़ाना आज आवश्यक है । क्योंकि इतिहास साक्षी है कि समाज

ने हमेशा अशिक्षा और अन्ध-विश्वासों के अधंकार को चीर कर प्रगति की राह तलाशी है ।

इस विज्ञान और आधुनिकता के माहौल में अपने निजी जीवन में हम घटिया संस्कारों से मुक्त नहीं हो पाए, धार्मिक विकृतियाँ और अंध-विश्वासों की सड़ांध को महसूस नहीं कर पाए तो ये प्रवृतियाँ समाज को आडम्बरों में उलझायेगी तथा भीतर से बौना बनाएगी । सामाजिक प्रतिबद्धता की कमी ने जहाँ व्यक्ति को आत्मकेन्द्रित और आलसी बनाया, वहीं समाज को निर्जीव और स्थिर भी बना दिया । कोई समाज नए प्रयोग, नए अविष्कार और नए सुधार तब करता है तब उसके लोग समाज की हर अच्छाई, बुराई के लिए स्वयं को जिम्मेदार समझे और सुधार के लिए प्रयास करे ।

इक्कीसवीं सदी के प्रवेश द्वार पर बैठा लवकुश समाज अपने भविष्य के प्रति आज जागरूक (निष्ठावान) होता तो दीख रहा है पर उसे इस अंधेरे से काफी लड़ना होगा तभी उजाला की ओर बढ़ सकेगा । आखिर उस नन्हें से दीये को कितना अंधेरे भुगतना पड़ता है तब ही अगले दिन का सूरज उसका अपना होता है । अतएव सामाजिक जड़ता की प्रवृत्तियों पर प्रभावी अंकुश की जरूरत है जिसके लिए एक मंच पर बैठ सबों को विचार -विमर्श करना होगा । महारैली की आवश्यकता इसलिए भी महसूस की गई ।

राजनीतिक चेतना का अभाव

आज सारी शक्ति सत्ता में केन्द्रित हो गई है । इसको मद्दे नजर रखते हुए हर समाज के लोगों का यह प्रयास हो रहा है कि संसद तथा विधान सभाओं में उसके अधिक से अधिक लोग जाएं क्योंकि आज जिस जाति के लोग अधिक संख्या मे संसद तथा विधान सभा में हैं उस जाति की व्यक्तिगत अथवा सामाजिक समस्याओं का समाधान भी व्यापक तौर पर शीघ्र होता है ।

लव-कुश समाज के साथ बिडम्बना यह है कि धन, बल और विद्या से भरपूर होते हुए भी इसकी राजनीतिक पहचान नहीं बन पा रही है और इसकी पहचान यदि है भी तो अपने लोगों को हराने में । इसके विधायक आज सिमटकर 30-32 हो गये हैं जबकि चार दशक पूर्व इन दोनों समाज के लगभग सत्तर-पचहत्तर सदस्य विधान सभा, विधान परिषद में होते थे । यह राजनीतिक चेतना के अभाव का ही द्योतक है । अतएव हर हालत में इसे अपनी राजनीतिक पहचान बनाने के लिए संसद तथा विधान सभाओं में अधिकाधिक लोगों को भेजना होगा । महारैली

का आयोजन इस दृष्टिकोण से भी आवश्यक समझा गया ।

अपनी अस्मिता की पहचान

अस्मिता बोध जगाने के लिए किसी आन्दोलन की जरूरत कब और क्यों पड़ती है, इसकी पड़ताल जरूरी है । यह भी जरूरी होता है कि बहस चलाकर, खूब सोच विचार कर हम इस तरह के आन्दोलन का रास्ता तय करें और यह कि अन्तत: हमें कौन सी चीज प्राप्त करनी है ।

आज स्थिति यह है कि हम इस लव-कुश समाज पर जब एक नजर दौड़ाते हैं तो इसे रूग्न ही पाते हैं । पिछले कई दशकों से इसके स्वास्थ्य में बराबर गिरावट ही आती चली जा रही है सामाजिक और राजनीतिक दोनों स्तरों पर । सांस्कृतिक, साहित्यिक, कला तथा क्रीड़ा के क्षेत्र में भी इस समाज के लोग बराबर पीछे चले जा रहे हैं । जिस समाज में कभी 'तीसरी कसम' वाले रेणुजी, मगही के लेखक यौधेय, प्रसिद्ध नाटककार 'लमगोड़ा', साहित्य-मनीषी प्रो० सिद्धेश्वर प्रसाद, अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भूगोल वेत्ता डा० पी० दयाल, हिन्दी तथा अँग्रेजी के उद्भट्ट विद्वान प्रो० बी० एम० के० सिन्हा, संस्कृत के पंडित डा० दामोदर महतो , सुप्रसिद्ध गणितज्ञ प्रो० लालजी प्रसाद, कलम के धनी प्रो० राम बुझावन सिंह जैसे एक से बढ़कर एक हस्ताक्षरों ने अपनी कलम से बिहार तथा भारत का नाम रौशन किया, आज उसी समाज में विविध प्राप्त और विशिष्ट प्रतिभाओं का अकाल है । साहित्य, कला, कौशल एवं दर्शन के नष्ट होते जाने से यह समाज इतना कुंठित हो गया है कि आजादी के बाद उसका कोई सामाजिक अस्तित्व नहीं रह गया है । नालन्दा और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों का हमारे मन में कभी-कोई ख्याल नहीं उठता है ।

वर्षों बाद नालन्दा मुक्त विश्वविद्यालय स्थापित होने पर भी सरकार ने उसे नालन्दा में ही प्रतिस्थापित करने की बात तो दूर इस पूरी योजना को कागजी बना दिया है । शिक्षा-माफिया तत्वों ने शिक्षा का आधार किराने की दुकान बना दिया है । इससे स्पष्ट है कि हम साक्षर-निठल्लों को अपाहिज बनाने का कुचक्र चल रहा है । एक तरफ नालन्दा विश्वविद्यालय की उपेक्षा की गई और दूसरी तरफ हम देख रहे हैं कि बहुतायत में जगह-जगह चरवाहा विद्यालय खोले जा रहे हैं । "एक तो करैला अपने तीत दूजे नीम चढ़ा ।"

यह सब कुछ देखते हुए भी हम निरपेक्ष दिखाई दे रहे हैं या तो ऐसे किसी मामलों में हमारी कोई रूचि नहीं है या फिर हम एकदम जड़ हो गये

हैं । ऐसी खतरनाक स्थिति में धीरे-धीरे समाज और उसके लोग मिट जाते हैं, हाशिए से भी बाहर हो जाते हैं । बचने के लिए, जीवित रहने के लिए भोजन से कम जरूरी नहीं होता है अपने निजित्व और अपने उत्स को पहचानना । जब ऐसी परिस्थितियाँ पैदा ले लेती हैं तो फिर एक ही उपाय बचता है कि हम अपने मान-सम्मान एवं अपनी अस्मिता की पहचान के लिए सोंचे और आन्दोलन प्रारम्भ करें और इसी सोंच और आन्दोलन के लिए महारैली और कन्वेंशन जरूरी समझा गया ।

आपसी वैमनस्यता प्रगति में बाधक

वस्तुस्थिति यह है कि आज कुर्मी एवं कुशवाहा समाज का विकास ऊपरी तौर पर अभिवृद्धि के रूप में हो रहा है, लेकिन अन्दर-अन्दर उसमें अनेक दरारें दीखती हैं । ये दरारें विभाजन रेखाओं की शक्ल पाती जा रही हैं । असल में दोनों में होने यह लगा हैं कि लोग व्यक्तिगत समृद्धि के लिए दूसरे की न्यूनतम जरूरतों को इस कदर अनदेखा करने लगे हैं कि यह प्रवृत्ति उसकी अवचेतना में समा गयी है । इससे छीना-झपटी का एक अनोखा दौर चल पड़ा है । समाज का समृद्ध वर्ग और समृद्ध होने की कोशिश में लगे मध्यम-वर्ग ने साधनों पर कब्जा जमा रखा है । संसाधनों पर वर्चस्व के फलस्वरूप लोग मतलब परस्त होते चले जा रहे हैं और वे अपने आप में सिमटते भी चले जा रहे हैं जिससे समाज के गरीब व अत्यन्त पिछड़े तथा साधन-विहीन वर्ग और पिछड़ते जा रहे हैं और आपस में इसी कारण कटूता भी बढ़ती जा रही है । जबकि उनकी प्रगति के लिए साधन-सम्पन्न, विद्वत्जन, नौकरी पेशा से जुड़े तथा समृद्ध वर्गो का सहयोग आवश्यक है क्योंकि व्यक्ति समाज की इकाई है । यह इकाई जैसी होगी, समाज व्यवस्था भी वैसी ही होगी । सामाजिक समरसता का होना, न होना एक प्रकार से व्यक्ति पर ही निर्भर करता है ।

दूसरी बात यह है कि **'हम किसी से कम नहीं,** का भूत लवकुश समाज के लोगों पर सवार है जो उसे पतन की ओर ले जा रहा है और वही आपसी वैमनस्यता का एक बड़ा कारण भी है जिससे मुक्त होना हर कीमत पर आज जरूरी है ।

आज के उत्साही और सक्रिय समाज में भविष्य के प्रति छटपटाहट तो दीखती है लेकिन परिस्थितियों के सामने भेद- भाव और स्वार्थ के कारण हर व्यक्ति अलग-थलग पड़ जाता है । इसके समाधान में मुख्य प्रश्न यह है कि हम विचार

और अनुभव के दो स्तरों पर स्वयं के समर्पण से इस वैमनस्यता की खाई को किस हद तक पाट सकते हैं । एक मन के लोग एक साथ बैठें तथा टूकड़ों में बिखरी हुई शक्ति को संजोकर समय का साक्षात्कार करें तो बौखलाये और उकताये हुये समाज, राज्य एवं राष्ट्र को एक वैकल्पिक सम्यता दे सकते हैं । कुर्मी चेतना महारैली एवं लव-कुश कन्वेंशन इसी दिशा में पहल करने का एक कदम है ।

समाज अन्ततः वही आगे बढता है जिसमें अपने इतिहास का नीर-क्षीर विवेक करने का स्वभाव हो और बुरे पहलुओं से संघर्षरत रहने की इच्छा शक्ति हो, इसी भावना से प्रेरित होकर महारैली की आवश्यकता महसूस की गई । कुर्मी कुशवाहा समाज में परस्पर समझदारी का एक लम्बा इतिहास रहा है और बड़ी मजबूत बुनियादें भी किन्तु उनके रिश्तों में भयंकर कडुवाहट आज नजर आ रही है । जो समाज या संस्था काल और समय के अनुसार अपने विचारों में परिवर्त्तन नहीं करता वह जीवन के संघर्ष में टिक नहीं सकता । इस दृष्टिकोण से आज आपसी वैमनस्यता को दूर कर सौहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण आवश्यक हो गया है । सामाजिक न्याय के तहत् सभी उपेक्षित जो लवकुश समाज की ओर आशा भरी नजरों से देख रहें हैं, के साथ परस्पर सहयोग की भावना बढ़ाने के लिए इस समाज को अग्रसर होना होगा ।

सत्ता में समान भागीदारी तथा सभी राजनीतिक एवं वैचारिक अन्तर्विरोध को भूलाकर एकजूटता का परिचय देना है । राजनीतिक माहौल और सामाजिक मूल्यों में आ रही गिरावट को रोकने की जिम्मेदारी इस समाज के सभी सदस्यों को लेनी है । जातिवाद से कलुषित हुए माहौल में सामाजिक न्याय के लिए प्रतिबद्ध होते हुए भी यह समाज जातिवाद से दूर हैं क्योंकि इसके सदस्य राष्ट्रीय चेतना से रसेसिक्त हैं ।

बिहार के नव निर्माण के लिए

आज का कुर्मी, कुशवाहा समाज जिस दयनीय, दर्दनाक और अमर्यादा की हालत में है उसके लिए कौन जिम्मेदार हैं ? प्रारम्भ से देखा जाय तो जिस जाति के हाथ में राजनीतिक सत्ता आयी, उस जाति ने बिहार को लूटा । जाति के नब्बे प्रतिशत लोग भूखे, नंगे, अशिक्षित और अपाहिज बने रहे परन्तु दस प्रतिशत लोगों ने उन्हें जातीय उन्माद में अंधा बनाकर रखा और मात्र कर्पूरी जी उनमें अपवाद निकले । सभी सत्ताधारी नेताओं ने गाड़ी की दिशा को जातीयता, भोग, भ्रष्टाचार, भ्रांति, भीड़ और भगदड़ की राह पर मोड़ दी तथा त्याग, ईमानदारी,

ज्ञान,संगठन तथा अनुशासन को ठेंगा दिखा दिया गया । सत्ता के लोग भोगी ज्यादा हो गये, त्याग को तिलांजली दे दी । भोगी समाज और स्वार्थी आत्मा में विद्रोह की शक्ति नहीं रह जाती है । सत्ता और समाज जब दिशाहीन, दृष्टिहीन और आदर्शहीन बन जाते हैं और जिस व्यक्ति या जाति के हाथ सत्ता और संगठन की बागडोर चली आती है उसी व्यक्ति या जाति में सारी उपलब्धियाँ कैद हो जाती हैं ।

बिहार की स्थिति आज यह है कि यह सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक बदहाली के बीच खड़ा है । यहाँ राजनीतिक आधार जाति-नीति, भ्रष्ट-नीति, भोग-नीति, कूटनीति और स्वार्थ-नीति रही है । हर स्तर पर हर क्षेत्र में पाखंड और भ्रष्टाचार का तांडव हो रहा है । 1974 के जे० पी० आन्दोलन के पूर्व जैसी सामाजिक, राजनीतिक स्थितियाँ थी उससे भी ज्यादा खतरनाक स्थितियां आज बिहार में मौजूद हैं । शिक्षा में आज जिस कदर अराजकता का दौर है, उससे सब कोई प्रभावित है । ऐसी स्थिति में लवकुश समाज के लोग मूकदर्शक बने रहेंगे, यह मुमकिन और मुनासिब भी नहीं । इसलिए नया बिहार बनाने के लिए आपको इसमें कुदना ही होगा । मुझे याद आती है किसी कवि की ये पक्तियाँ -

"वो दर्द, वो बदहाली के मंजर नहीं बदले,
बस्ती में अंधेरों से भरे घर नहीं बदले,
दर्द जब बेजुबान होता है,
कोई शोला जबान होता है,
अपने ही हाथों से पतवार संभाली जाये,
तब तो मुमकिन है कि यह नाव बचा ली जाये ।"

☆✻☆✻☆

बिहार राज्य कुर्मी चेतना महारैली का आयोजन

व्यवस्था

हम सब इस बात से अवगत हैं कि किसी भी आयोजन की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसकी व्यवस्था कैसी है । उचित व्यवस्था के लिए आयोजन के प्रति पूर्ण समर्पण, सूझबूझ तथा आपसी तालमेल आवश्यक है ।

वैसे सच कहा जाय तो समाज के विभिन्न संगठनों ने अपने ढंग से सामाजिक कुरीतियों पर विजय पाने के लिए समय-समय पर अपनी भूमिका निभाई है किन्तु संगठित होकर कुर्मी समाज के इतिहास में महारैली कभी नहीं हुई । हाँ, अधिवेशन , सेमिनार, गोष्ठी, जयन्तियाँ आदि के कार्यक्रम होते रहे जिसके फलस्परूप शनैःशनै जन-मानस आन्दोलित होता रहा । इस बार के आयोजन के लिए वैसे समाज के नेताओं, कार्यकर्त्ताओं , बुद्विजीवियों तथा राजनीतिक कार्यकर्ताओं की लगभग एक दर्जन बैठकें हुई । इसी क्रम में एक बार नई दिल्ली के नार्थ एवेंन्यू स्थित सांसद क्लब में विगत 27 अगस्त, 1993 को आयोजित बैठक में उपस्थित सांसदों तथा दिल्ली में कार्यरत समाज के कोई दो सौ बन्धुओं ने बिहार की राजधानी पटना में एक भव्य आयोजन कर अपनी संगठित एकता और एकजुटता का परियच देने की आवश्यकता बताई ।

समितियों का गठन

अन्त में होते हवाते यह निर्णय लिया गया कि सभी सामाजिक संगठनों के सहयोग से महारैली का आयोजन किया जाय । उसी निर्णय के आलोक में तीन स्तर पर समितियां बनाई गईं ।

(1)संचालक-मंडल (2)संचालन समिति तथा (3) राज्य स्तरीय तैयारी समिति ।

इकावन सदस्यों की गठित समिति ने प्रो० राम प्रवेश सिंह के संयोजकत्व में एक संचालक-मंडल का गठन किया जिसके अन्य सदस्य थे सिद्धेश्वर, मिथिला

शरण सिंह, प्रो० लालकेश्वर प्र० सिंह, डी.एन.सिंह, तथा जय किशोर प्र० सिंह । इसी प्रकार तीन सौ इकावन सदस्यों की एक राज्य स्तरीय तैयारी समिति का गठन किया गया जिसमें प्राध्यापक , राजनेता, अभियन्ता अधिवक्ता, सामाजिक कार्यकर्त्ता तथा महिलाओं के प्रतिनिधि के साथ साथ सभी जिलों के प्रतिनिधियों को शामिल किया गया था । इसके अतिरिक्त पूर्व में बनी आम सहमति के अनुसार बिहार राज्य कुर्मी सभा, पटेल सेवा संघ, बिहार, कुर्मी विकास परिषद, कुर्मी हितकारिणी न्यास, पटेल छात्र संघ, कुर्मी कल्याण मंच, पटेल विचार मंच आदि सभी सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों को सभी समितियों मे मनोनित किया गया था । साथ ही महारैली की व्यवस्था के लिए विषय, विधि-व्यवस्था, यातायात, सूचना एवं प्रचार, निमंत्रण कक्ष, महिला, भोजन एवं आवास, मंच, द्वार, पंडाल सफाई तथा पानी आदि को लेकर कोई डेढ़ दर्जन समितियाँ थी । वित्त व्यवस्था के लिये निम्न सदस्यों की एक वित्त समिति बनी जिसके कोषाध्यक्ष डा. मोहन सिंह को बनाया गया । अन्य सदस्य थे - डा. एस. एन. आर्य, प्रो. उषा सिंह, डा. वीरेश प्र० सिन्हा, श्री सतीश कुमार तथा श्री संजय कुमार सिंह । महारैली में विधि व्यवस्था कायम करने के लिए लगभग डेढ़ हजार स्वयं सेवकों को तैनात किया गया था ।

महारैली के संचालन के लिए दारोगा प्र०राय पथ स्थित पटेल सेवा संघ, बिहार के कार्यालय में एक केन्द्रीय कार्यालय तथा वीरचन्द पटेल पथ स्थित विधायक फ्लैट संख्या ४0 में आवासीय कार्यालय रखे गये । केन्द्रीय कार्यालय के प्रभारी थे डा० वीरेश प्र० सिन्हा तथा श्री अनिल कुमार सिंह और आवासीय कार्यालय के प्रभारी श्री राम प्रसाद जी तथा श्री कपिलदेव प्रसाद ।

महारैली के अधिकृत प्रवक्ता थे श्री सिद्धेश्वर तथा डा. वीरेश प्र० सिन्हा । अन्त में एक स्वागत-समिति का गठन किया गया जिसके स्वागताध्यक्ष हुए प्रख्यात भूगोल वेत्ता डा० पी० दयाल । महारैली के पूरे संचालन का भार विधायक श्री सतीश कुमार ने उठाया ।

☆✻☆✻☆

रथ-यात्रा

महारैली के पूर्व रथ निकालने का निर्णय सच कहा जाय तो किसी बैठक में नहीं लिया गया । दरअसल यह बात कर्मठ युवा कार्यकर्त्ताओं के दिमाग की उपज थी । अनिल कुमार सिंह,अजय कुमार राकेट, राजीव पटेल, चन्द्रदेव सिंह तथा रवीन्द्र प्र० सिंह जैसे समर्पित कार्यकर्त्ताओं ने रथ-यात्रा का कार्यक्रम तैयार किया तथा बिहार के विभिन्न जिलों एवं कस्बों मे जाकर महारैली के उद्येश्यों को बताने तथा उसके प्रचार-प्रसार की योजना बनायी ।

रथ तैयार हुआ । रथ को सुसज्जित कर उसके आगे तथा दोनों ओर छत्रपति शिवाजी और लौहपुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल की तस्वीरें लगाई गईं । रथ के पीछे वाले हिस्से में लगी पटना सचिवालय के सामने स्थित शहीद स्मारक की तस्वीर कुर्मी समाज के गौरवमय अतीत की याद दिला रही थी, और जिसमें छिपी थी समाज के नौजवान छात्रों के बलिदान और त्याग की कहानी । बगल में टंगे बोर्ड पर लिखा था नारा ***"वक्त जब गुलशन पे पड़ा तो खून से सींचा हमनें, अब जब बहार आई तो कहते हैं तेरा काम नहीं ।"*** उद्देश्य लिखा था-***"मान और सम्मान के लिए, अपनी पहचान के लिए"*** ।

विगत 2 जनवरी, 94 को स्थानीय दारोगा प्र० राय पथ स्थित पटेल सेवा संघ, बिहार के कार्यालय से गगन भेदी नारों के साथ हजारों समाज के कार्यकर्त्ताओं तथा नेताओं की उपस्थिति में रथ-यात्रा का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ । सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने रथ यात्रियों को फूलमालाओं से अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए रथ को विदा किया । हजारों मोटर गाड़ियों एवं वाहनों के साथ जलूस की शक्ल में सड़कों से गुजरते हुए दानापुर के पास बेली रोड के अन्तिम छोर पर रथ अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रस्थान किया । फिर 2 फरवरी, 94 को विभिन्न स्थानों का भ्रमण कर जब रथ पटना के पूर्वी छोर के मसौढ़ी रोड पर पहुँचा तो पुनः सामाजिक एवं राजनीतिक नेताओं के साथ समाज के हजारों कार्यकर्त्ताओं ने उसका तहे दिल से स्वागत किया और जुलूस की शक्ल में उसे महारैली के केन्द्रीय कार्यालय तक लाया गया जहाँ रथ-यात्रियों को अभिनन्दन किया गया । जिन-रथ-यात्रियों ने इस सराहनीय एवं साहसिक कार्य को सम्पन्न किया उनके नाम हैं -

(1) अजय कुमार राकेट (2) राजीव पटेल (3) रवीन्द्र प्र० सिंह

(4) गजेन्द्र सिंह (5) सत्येन्द्र प्र० सिंह (6)हरेन्द्र पटेल (7)धर्मेन्द्र पटेल (8)चन्द्रदेव प्र०सिंह (9) कामाख्या प्र०सिंह (10) प्रेम रंजन पटेल (11) उपेन्द्र कुमार (12) प्रभात किशोर (13) उपेन्द्र सिंह (14) थकाय लाल राय (15) अरूण कुमार (16) अजय कुमार तथा (17) जैनेन्द्र कुमार ।

रथ-यात्रा प्रारम्भ होने के एक दिन पूर्व एक पायलट गाड़ी निर्धारित स्थानों में जाकर रथ-यात्रियों के आवास, भोजन तथा बैठक आदि के लिए रवांना हुई थी जिसके पायलट थे -

(1) रंजीत सिंह (2) सुरेन्द्र सिंह तथा (3) शम्भु नाथ सिंह

वास्तव में इतने बड़े सामाजिक अनुष्ठान को सफलता पूर्वक सम्पन्न करने का यह रथ-यात्रा कार्यक्रम अनुठा प्रयोग था । इसके द्वारा बिहार के कोने-कोने में जाकर रथ-यात्रियों ने न केवल समाज के लोगों के जन-मानस को आन्दोलित व उद्वेलित किया वरन अन्य समाज के लोगों तक भी महारैली के उद्देश्यों को पहुँचाने का सार्थक प्रयास किया गया । रथ-यात्रा के लिए विशेष रूप से तैयार कैसेट्स के अर्थवान नारों एवं भाषणों ने समाज के लोगों के दिलों को झकझोरा तथा 12 फरवरी 94 को पटना के ऐतिहासिक गाँधी मैदान में लाखों की संख्या में उपस्थित होकर अपनी एकजुटता का परिचय देने को बाध्य किया । यही था रथ-यात्रा का कमाल और इसलिए रथ-यात्रियों को बार-बार सलाम ।

☆❋☆❋☆

कुर्मी चेतना रथ विगत 2 जनवरी को पटना से प्रस्थान करते हुए ।

महारैली के कार्यवृत (12 फरवरी, 1994)

स्वागताध्यक्ष का भाषण

महारैली के स्वागताध्यक्ष तथा सुप्रसिद्ध भूगोलवेत्ता डा. पी. दयाल ने मंच पर पधारे सभी मान्य अतिथियों तथा ऐतिहासिक गाँधी मैदान में उपस्थित अपार जन-सैलाब का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए पाटलिपुत्र से जुड़े बुद्ध, महावीर, अजात शत्रु, कौटिल्य, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, अशोक तथा आर्यभट्ट सरीखे महान् विभूतियों की याद दिलाई । उन्होंने कहा कि हमारी वर्त्तमान दशा बहुत हद तक हमारी कमजोरियों, मानसिकता, आपसी भेद-भाव तथा सामाजिक जिम्मेदारी के अहसास की कमी का प्रतिफल है जिसे दूर करना आज जरूरी हैं । किसी भी वर्ग के उत्थान में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है । कुछ जिलों को छोड़ बहुत सारे जिले ऐसे हैं जहाँ इस समाज के लोगों में शिक्षा की कमी है । खासकर स्त्री-शिक्षा की आवश्यकता पर उन्होंने बल दिया ।

कुर्मी समाज में नेतृत्व के अभाव के फलस्वरूप इसे सही दिशा देने में कठिनाई हो रही है ऐसा उन्होंने महसूस किया । उन्होंने अपने स्वागत-भाषण के अन्त में यह आशा व्यक्त की कि यह महारैली निश्चित रूप से आगे आने वाले दिनों में समाज को एक दिशा देगी तथा मंच से पारित प्रस्तावों एवं संकल्पों को समाज के उत्साही नौजवान एवं छात्र अपने बुजूर्गो के अनुभव का लाभ लेकर उसे साकार करने का प्रयास करेंगे तभी राष्ट्र की मुख्यधारा से जुड़कर उसे सबल बनाने में वे समर्थ होंगे ।

उद्घाटन-भाषण

महारैली का उद्घाटन करते हुए पूर्व लोकसभाध्यक्ष तथा प्रखर समाजवादी सांसद **श्री रवि राय** ने कहा कि समाज की मुख्यधारा में कुर्मी समाज को लाने के लिए हमें एकजुट होकर संघर्ष करना होगा । श्री राय ने कहा कि कुर्मी समुदाय जो मेहनकश किसान वर्ग से आता है, पिछले डेढ़ हजार वर्षों से उपेक्षा का शिकार रहा है । हजारों वर्षों से चली आ रही समाज व्यवस्था की धारा को ही बदलने

के उद्देश्य से आज हम यहाँ भारी संख्या में इकट्ठे हुए हैं ।

श्री राय ने कुर्मी समाज को शिक्षित होने के साथ-साथ कुसंस्कारों और कुरीतियों के खिलाफ जेहाद छेड़ने का भी आह्वान किया । उन्होंने कहा कि इस जाति को आगे निकलना होगा । श्री राय ने कहा कि मूलतः किसान वर्ग की इस जाति को इनके खिलाफ चल रहे षड्यंत्रों से सचेत रहना होगा ।

अतिथियों के उद्गार

पूर्व केन्द्रीय कृषि मंत्री जद (ज) सांसद **श्री नीतीश कुमार** ने कहा कि रैली में अपार भीड़ ने बिना कुछ कहे ही सब कुछ कह दिया है । चाहे कोई दिल्ली की गद्दी पर बैठा हो या पटना की गद्दी पर, इस समाज की उपेक्षा कर ज्यादा दिनों तक अपनी गद्दी को सुरक्षित नहीं रख सकता । उन्होंने कहा कि कुर्मी जाति के लिए यह धारणा पैदा हो गई थी कि उसकी उपेक्षा हो रही है । इस जाति की उपेक्षा करके कोई राजनेता अब जिन्दा ही नहीं रह सकता, मैं आप को यह भरोसा दिलाना चाहता हूँ । उन्होंने कहा कि कुर्मी जाति यह संकल्प ले कि हम न तो किसी की उपेक्षा करेंगे और न उपेक्षित रहेंगे । उन्होंने पुनः कहा कि अबतक इस जाति को हिस्सा नहीं मिला । संविधान में संशोधन हो और आरक्षण का दायरा पचास फीसदी से अधिक हो ।

श्री कुमार ने कहा कि कुर्मी जाति को सामाजिक न्याय की ताकतों को गोलबन्द करके उनका नेतृत्व करना चाहिए । उन्होंने तीरंदाजी प्रतियोगिता में अव्वल आनेवाली पूर्णिमा महतो का खर्च बहन करने की मांग सरकार से की । इस समय देश में किसानों के खिलाफ साजिश चल रही है । किसान विरोधी सरकारी नीतियों का विरोध करने की जरूरत है । उन्होंने कुर्मी समाज से अपील की कि वे पंचायतों में आरक्षण का लाभ उठाकर ग्रामीण राजनीति पर अपनी पकड़ बनावें ।

महारैली को संबोधित करते हुए सासंद **श्री राम पूजन पटेल** ने कहा कि इस रैली में उपस्थित अपार जन-सैलाब को देखकर यह विश्वास हो गया कि यह जाति अब जाग चुकी है और अब कोई इसे दबा नहीं सकेगा । उन्होंने पुनः कहा कि सामाजिक कुरीतियों से लड़ना होगा । इसे शिक्षा की जरूरत है । शिक्षा से सत्ता में भागीदारी और इसी से मान-सम्मान मिलेगा ।

विहिप नेता एवं भाजपा सांसद **श्री विनय कटियार** ने कहा कि बिहार की हालत सोमालिया जैसी है । पीने का पानी नहीं है । अस्पताल नहीं है । उन्होंने

र्मियों में आई चेतना पर खुशी जाहिर करते हुए इनके शक्ति प्रदर्शन को बेहतर संकेत कहा । उन्होंने पुनः कहा कि अगर इस रैली में भाग नहीं ले पाता तो शायद मुझे जीवन भर पछतावा होता । उन्होंने कहा कि हम शिवाजी और सरदार पटेल के वंशज है, लेकिन जब हम इस महापुरूषों के रास्ते चलने की बात करते हैं तो हमें साम्प्रदायिक करार दिया जाता है । देश की वर्तमान स्थितियों के सन्दर्भ में उन्होंने कहा कि आज सारा देश विदेशी कर्ज से लद गया है और हम फिर गुलामी की ओर बढ़ रहे हैं । हमें कुर्मी समाज के साथ ही देश के संबंध में भी सोचना पड़ेगा, उन्होंने कहा ।

जद (ज) सांसद **श्री वृषिण पटेल** ने कहा कि यह बुद्धिजीवी समाज की रैली है और हमें इनमें चेतना जगाने की नहीं बल्कि चेतना बरकरार रखने की जरूरत है । उन्होंने कहा कि हमें कुशवाहा समाज को भी अपने समाज में सम्मिलित कर अपने समाज का विस्तार करना चाहिए ।

उन्होंने कहा कि हमें सबसे पहले अपने समाज के गरीब बच्चों की शिक्षा तथा उनकी बेटियों की शादी के लिए एक ट्रस्ट बनाना चाहिए । उन्होंने युवकों को आह्वान किया वे इस रैली में यह संकल्प लें कि वे बिना दहेज का विवाह करेंगे तथा जाति उपजाति की सीमा को तोड़ेंगे ।

झामुमो सांसद **श्री शैलेन्द्र महतो** ने कहा कि कुर्मी समाज को सत्ता से हमेशा दूर रखा गया है और हमें अब राजसत्ता पर कब्जा का संकल्प लेना है । कुर्मी समाज को नया इतिहास बनाना है और उन्हें अपना वाजिब हक लेना है ।

भाजपा सांसद **श्री रामटहल चौधरी** ने रैली को संबोधित करते हुए कहा कि इस रैली ने कुर्मी समाज की ताकत को उजागर किया है साथ ही यह संदेश भी दिया है कि यह समाज अब अपनी उपेक्षा सहन नहीं कर सकता है । उन्होंने माँग की कि कुर्मी रेजिमेन्ट का गठन किया जाय ।

काँग्रेस नेता और पूर्व केन्द्रीय मंत्री **प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद** ने कहा कि बिहार के नवनिर्माण में कुर्मियों का योगदान रहा है । इसके बावजूद इस जाति का कोई व्यक्ति बिहार का मुख्य मंत्री नहीं बन सका । उन्होंने कहा कि आजादी की लड़ाई से लेकर आज तक बिहार को बनाने का ही हमने काम किया है ।

उत्तर प्रदेश के कल्याण और पंचायती राज मंत्री **श्री रामलखन वर्मा** ने कहा कि जब तक राजनीतिक चाभी हमारे हाथ में नहीं होगी तबतक समाज

को कल्याण भी नहीं होगा । उन्होंने कहा कि जब हम सब एक हो जाएंगे तो अपने अधिकारों को खुद प्राप्त कर लेंगे ।

बिहार सरकार के मंत्री **श्री मंगनी लाल मंडल** ने कहा कि हमें आगे बढ़ने के लिए अपने समाज में व्याप्त कुरीतियों को खत्म करना होगा । जबतक हम उपजातियों के बीच बेटी-रोटी का संबंध स्थापित नहीं करेंगे तबतक हममें एका नहीं हो सकती है ।

विधायक **श्री लालचन्द महतो** ने कहा कि कुर्मी समाज को उसकी आबादी के अनुपात में सत्ता में भागीदारी नहीं मिली है । हम चौदह प्रतिशत हैं परन्तु मात्र इतने ही विधायक कुर्मी समाज के है ।

बिहार के पूर्व मंत्री एवं कॉंग्रेस नेता **श्री सदानन्द सिंह** ने कहा कि इस समाज की उपेक्षा कर कोई सत्ता में नहीं रह सकता हैं । हमें अपनी एकता के बल पर अपना हक लेना होगा ।

बिहार के मंत्री **श्री उपेन्द्र प्र. वर्मा** ने कहा कि सत्ता में प्रभावी भागीदारी के लिए हमें अपनी सारी कमजोरियों पर विजय प्राप्त कर सामाजिक एकता कायम करनी होगी ।

समाजवादी नेता तथा पूर्व मंत्री श्री **भोला प्र. सिंह** ने आह्वान किया कि कुर्मी समाज की अगुआई में दलित, पीड़ित, शोषित तथा अन्य पिछड़े समुदाय को एक साथ चलकर सत्ता के शिखर पर बैठ जाना है ।

बिहार के पूर्व राज्य मंत्री **श्री श्याम सुन्दर सिंह** के छोटे भाषण के सबसे छोटे अंश को भीड़ ने गौर से सुना । उनका कहना कि मंडल का समीकरण 'एच' (हरिजन) 'एम' (मुस्लिम) एवं 'वाई' (यादव) से बनता है तो कुर्मी कहाँ है ?

झामुमो विधायक **श्री सुधीर महतो** ने कहा कि कुर्मी समाज के लोगों को आज तक केवल ठगने का काम किया गया है । इनका राजनीतिक इस्तेमाल कर दुत्कार दिया जाता है । लेकिन अब ऐसा नहीं होगा ।

विधायक **श्री विनोद कुमार राय** ने कहा कि तीन प्रतिशत आबादी वाला ब्राह्मणों ने तेतालिस वर्षों तक राज्य किया अब तेरह प्रतिशत यादवों की संख्या हैं तो वह चालीस वर्षों तक राज करने को कह रहा है । फिर कुर्मी कब राज करेगा ?

भाजपा नेता **प्रो. उषा सिन्हा** ने कहा कि बिहार में कुर्मी समाज की संख्या एक करोड़ अठारह लाख है इसके बावजूद सामाजिक एवं राजनीतिक स्तर पर इसकी घोर उपेक्षा हुई है । उन्होंने कहा अब यह तय कर लेना चाहिए कि हम गिदड़ की तरह शेर के मारे शिकार का इन्तजार नहीं करेंगे, बल्कि शेर की तरह अपना शिकार स्वयं करेंगे । उन्होंने कहा कि केंचुआ बनने पर लोग कुचल डालते है, लेकिन वही जब हम नाग बन जाएगें तो सभी पूजा करेंगे ।

भाजपा नेता **श्रीमती चन्द्रकान्ता सिन्हा** ने कहा कि इस समाज के लोगों को अब यह तय कर लेना होगा कि रथ का पहिया बनकर जो चलते रहे हैं अब नहीं चलेंगे ।

जद विधायक **श्री विश्वमोहन चौधरी** ने विस्तार से कुर्मी समाज के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को प्रस्तुत करते हुए अपनी एकजुटता का परिचय देने की सलाह दी ।

महारैली को जिन अन्य नेताओं ने संबोधित किया उनमें पूर्व विधायक श्री अरुण कुमार सिंह, पूर्व मंत्री श्री नन्द किशोर प्र. सिंह, श्री ब्रह्मदेव पटेल, बिहार के राज्य मंत्री श्री हरि नारायण सिंह, रथ-यात्री गण, विधायक मधु सिंह का नाम उल्लेखनीय है । इसके पूर्व रथ-यात्रियों का मंच से परिचय कराया गया ।

महारैली के मंच से कुल तेईस सामाजिक एवं राजनीतिक प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए विधायक **रामधनी सिंह** ने कहा कि सत्ता हासिल करने के लिए हमें अपनी सामाजिक कुरीतियों से लड़ना होगा तथा सामाजिक एकता स्थापित करनी होगी । सभी प्रस्तावों को जन सैलाब ने करतल ध्वनि से पारित किया ।

महारैली के मंच पर कुर्मी समाज के जिन तीन शहीदों ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में अपने प्राणों को न्योछावर किया था उनकी विधवाओं एवं परिवार की महिलाओं को महारैली के मंच पर सम्मानित किया गया ।

अध्यक्षीय भाषण

महारैली की अध्यक्षता विधायक **श्री सतीश कुमार** ने की । उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हम जातीय रैलियों को जातीय रैली से ही तोड़ना चाहते हैं । इस मंच से हम कुर्मी जाति के विभिन्न वर्गों को एक करना चाहते हैं । आज की इस अपार भीड़ ने यह सिद्ध कर दिया है कि सत्ता हासिल करने के लिए हम एकजुट होकर रहेंगे । उन्होंने पुनः कहा कि इस एकजुटता के

लिए हमें आपसी वैमनस्यता को खत्म करना होगा तथा तिलक दहेज, शाखा-प्रशाखा के भेदभाव तथा शादी विवाह और अन्य ऐसे संस्कारों पर आडम्बर पूर्ण खर्च जैसी सामाजिक कुरीतियों पर विजय पाना होगा । उन्होंने कहा कि इस तरह की रैली के माध्यम से सामाजिक चेतना आयेगी और जात-पात पर विश्वास करने वालों का भ्रम टूटेगा और भ्रम टूटने पर जात-पात का अन्त स्वतः हो जायेगा ।

धन्यवाद-ज्ञापन

महारैली के प्रवक्ता **श्री सिद्धेश्वर** ने अपने धन्यवाद-ज्ञापन में कहा कि आज की यह विशाल रैली अविस्मरणीय हो गई और बिहार की जनता के दिलों पर एक छाप छोड़ गई । साथ ही जन-मानस को आन्दोलित करने में यह रैली सफल हुई । महारैली के उद्घाटन कर्त्ता श्री रवि के प्रति अपनी सुक्रिया अदा करते हुए कहा कि इस प्रखर समाजवादी नेता ने आयोजन में पधारकर पूरे कुर्मी समाज को मार्गदर्शन करने की कृपा प्रदान की है

प्रखर सांसद श्री नीतीश कुमार के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उन्होंने यह आशा व्यक्त की कि श्री कुमार ने जिस लहजे में अपना उद्गार व्यक्त किया है, उससे लोगों में आशा का संचार हुआ है । विश्वास है वे इस रास्ते पर चलकर न केवल समाज को बल्कि पूरे बिहार को एक सही दिशा देंगे और नये बिहार के निर्माण के लिए अग्रसर होंगे ।

महारैली में उपस्थित सभी मान्य अतिथियों के प्रति आयोजकों की ओर से आभार व्यक्त किया गया । बिहार के कोने-कोने से आये अपार जन सैलाब को तहे दिल से धन्यवाद देते हुए श्री सिद्धेश्वर ने कहा कि उपस्थित जन समूह ने आज अपनी अनुशासन प्रियता तथा शालीनता का परिचय दिया है । पटना के नागरिकों का दिल उन्होंने जीता है ।

आयोजन की सभी समिति के सदस्यों तथा रथ-यात्रियों ने जिस निष्ठा तथा कर्मठता का परिचय देकर महारैली को सफल बनाया है उसके लिए वे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं ।

आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के संवाददाताओं को धन्यवाद देते हुए श्री सिद्धेश्वर ने कहा कि इस भव्य कार्यक्रम का न्यूज प्रमुखता से कवरेज कर संचार माध्यमों ने महारैली के संकल्पों एवं उद्देश्यों को जो घर-घर तक पहुँचाने का काम किया है वह अत्यन्त प्रशंसनीय है ।

बिहार सरकार के उन सभी दण्डाधिकारियों को आयोजकों की ओर से शुक्रिया अदा किया गया जिन्होंनें यातायात तथा विधि-व्यवस्था कायम करने में सहयोग प्रदान किया है । खासकर आरक्षी उपमहानिरीक्षक श्री आशीष रंजन सिन्हा तथा जिलाधिकारी, पटना श्री रमेश अभिषेक विशेष धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने व्यक्तिगत दिलचस्पी लेकर विधि-व्यवस्था कायम करने में कोई कसर नहीं उठा रखा है । श्री सिद्धेश्वर ने उन सबों के प्रति कृतज्ञता प्रकट की ।

अन्त में उन सभी शुभचिन्तकों, स्वयं सेवकों, समाज के युवा कार्यकर्त्ताओं एवं छात्रों जिनकी सदिच्छा एवं सक्रियता से यह महारैली ऐतिहासिक बन गयी, के प्रति श्री सिद्धेश्वर ने आयोजकों की ओर से आभार व्यक्त किया । ❐

❖ ❄ ✱ ❄ ❄ ✱ ❖

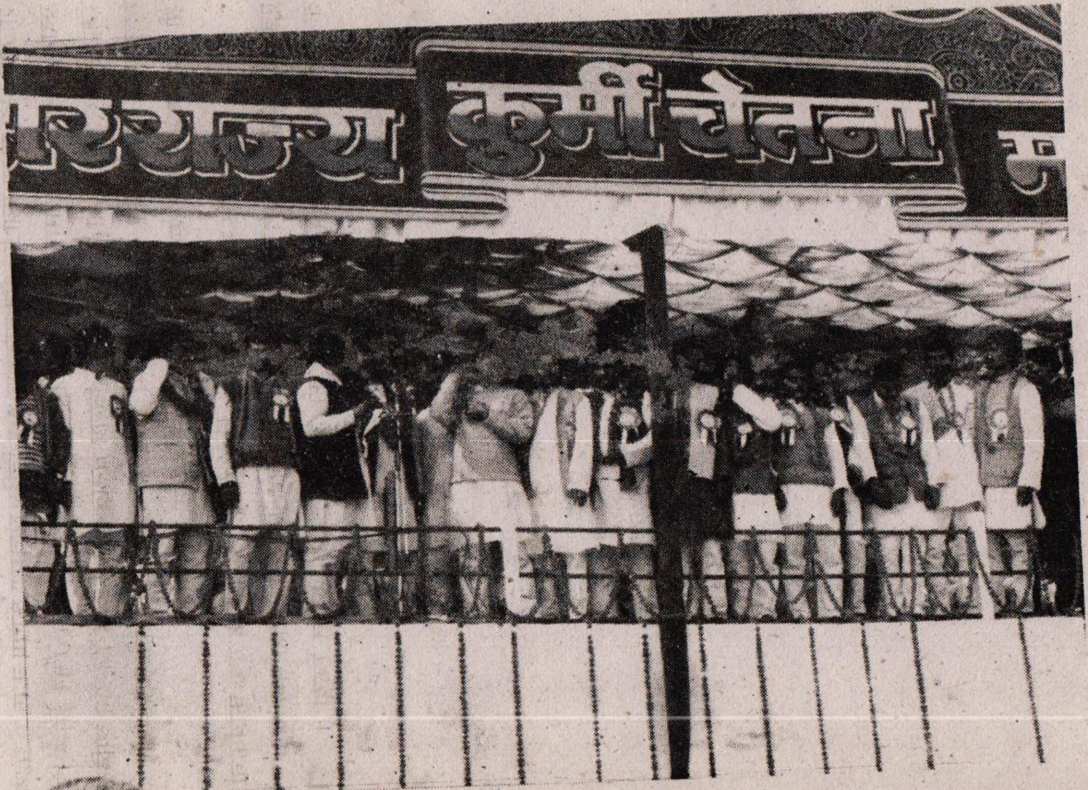

महारैली के मंच पर रथ-यात्रियों का परिचय कराते हुए अध्यक्ष श्री सतीश कुमार ।

महारैली में पारित प्रस्ताव

1. सामाजिक न्याय में हमारी पुनः आस्था है, किन्तु सत्ता में हमारी भागीदारी महत्वपूर्ण एवं प्रभावकारी हो ।
2. सामाजिक न्याय के संघर्ष और उसकी उपलब्धियों में हमारी हिस्सेदारी प्रभावकारी हो ।
3. सामाजिक न्याय के लिए एक सामाजिक ट्रस्ट का निर्माण किया जाय ।
4. वृहत्तर कुर्मी समाज के निर्माण के लिए शाखान्तर विवाह ही किया जाय ।
5. घुलनशील जाति को कुर्मी जाति में सम्मिलित किया जाय ।
6. छोटानागपुर एवं संथालपरगणा क्षेत्र के कुर्मी (महतो) को जनजाति घोषित किया जाय ।
7. दलित एवं शोषित वर्ग के साथ हमारा अटूट संबंध है जिसे और मजबूत किया जाय ।
8. कृषि को उद्योग का दर्जा दिया जाय ।
9. कुर्मी रेजिमेंट की स्थापना की जाय ।
10. महिलाओं के विकास के लिए उन्हें पूर्णरूप से शिक्षित किया जाय ।
11. विधवा-विवाह को सामाजिक मान्यता दी जाय ।
12. महिलाओं को राजनीतिक हिस्सेदारी में प्राथमिकता दी जाय ।
13. छात्रों एवं युबकों के लिए -

    (I) राजनीति के प्रति छात्रों में जागरूकता पैदा किया जाय ।

    (II) शिक्षा के प्रति छात्रों में अधिक से अधिक रूझान पैदा की जाय ।

    (III) छात्रों के लिए अधिक से अधिक छात्रावास का निर्माण किया जाय ।
14. संविधान में संशोधन कर आरक्षण की सीमा 50 प्रतिशत से बढ़ायी जाय ।

15. युवकों को सामाजिक एवं राजनीतिक क्रियाकलापों में आगे लाया जाय ।
16. पूर्व विधायक श्री पंकज कुमार सिन्हा की मुक्ति के लिए केन्द्रीय सरकार पर पूर्ण रूप से दबाव डाला जाय ।
17. आपसी वैमनस्यता को दूर करने के लिए सद्भाव समिति का गठन किया जाय ।
18. तिलक दहेज को समाप्त किया जाय ।
19. प्रत्येक कुर्मी अपने नाम के पीछे 'पटेल' लिखें ।
20. पटना के किसी उपयुक्त चौराहे पर छत्रपति शिवाजी की अश्वारोही आदमकद प्रतिमा लगाई जाय ।
21. कुर्मी बाहुल्य आरक्षित निर्वाचन क्षेत्र को अनारक्षित किया जाय ।
22. नालन्दा खुला विश्वविद्यालय को नालन्दा विश्वविद्यालय बनाया जाय ।
23. पटेल सेवा संघ, बिहार के आवंटित भू-खंड पर सरदार पटेल राष्ट्रीय एकता संस्थान भवन का निर्माण किया जाय ।

☆✻☆✻☆

महारैली की झलकियाँ

पटना, 12. एवं 13 फरवरी के समाचार-पत्रों से साभार -

कुर्मी महारैली को लेकर आज सबेरे से ही राजधानी में गहमा-गहमी थी। कई महल्लों में तो उत्सव जैसा माहौल था। सड़कों पर उमड़ती भीड़, गाड़ियों के काफिले और महारैली में शामिल होने जा रहे लोगों द्वारा लगाये जाने वाले नारे विशिष्ट संकेत दे रहे थे।

****

कुर्मी युवक छत्रपति शिवाजी और सरदार वल्लभ भाई पटेल को अपने आदर्श के रूप में पेश कर रहे थे। बेली रोड से आ रहे जुलूस में एक युवक शिवाजी की वेशभूषा में घोड़े पर सवार हो आगे-आगे चल रहा था। उसके हाथ में नंगी तलवार थी। उसके पीछे छः अन्य युवक सिपाही के वेष में चल रहे थे। गाँधी मैदान में पहुँचने पर वह लोगों के आकर्षण का केन्द्र बन गया। जुलूस में हाथी और ऊँट तथा बैंड बाजा तथा सरफरोशी की तमन्ना वाले गीत भी थे। सैकड़ों युवक माथे पर केसरिया पट्टी बांधे हुए थे।

****

बिहार राज्य कुर्मी चेतना महारैली में आये लोगों की गाड़ियां भी देखने लायक रही। गाँधी मैदान से सटी हुई तमाम सड़कें इन गाड़ियों से अटी रही। कार, जीप और ट्रक तथा बसों की भरमार ने आम लोगों को आश्चर्य में डाल दिया।

चेतना

****

रैली में आई अप्रत्याशित भीड़ को आम लोग तो आम लोग आयोजक भी आश्चर्य ढंग से देख रहे थे। गाँधी मैदान के निकट के एक पान

बिक्रेता ने कहा कि यह रैली तो पिछले दलित आदिवासी रैली से भी बड़ी शानदार रही। चेतना

* *

रैली में शामिल लोग जिन गाड़ियों से आ रहे थे उनमें बंधे लाउडस्पीकर या तो देशभक्ति गीत बज रहे थे, या नारे लग रहे थे। लेकिन बख्तियारपुर से आई एक बस सबके आकर्षण का केन्द्र बनी हुई थी। उस बस पर बंधे लाउडस्पीकर से फिल्मीगीत बज रहे थे और नौजवान झूम रहे थे। चेतना

* *

रैली की वजह से सड़कों के जाम रहने से जहाँ एक तरफ आम नागरिकों के लिए समस्यायें उत्पन्न हो गई थी, वहीं गाँधी मैदान के ठेले और खोमचे वालों के तो मानों भाग्य खुल गये थे। एक-एक ठेले और खोमचे वालों के यहाँ जबरदस्त भीड़ देखी गई। एक खोमचे वाले से यह कहते सुना गया कि ऐसी रैली बराबर हो तो क्या कहने। क्योंकि रैली के लोग सब सज्जन तथा संयमी है। कभी किसी ने एक पैसा कम नहीं दिया बल्कि कुछ लोग तो एक रुपया की जगह दो रुपये दिये। चेतना

* *

रैली में भीड़ इतनी ज्यादा हो गई थी कि लोगों को मंच पर बैठे नेताओं के चेहरे नहीं दिखाई पड़ रहे थे। अपने नेताओं को देखने के लिए भीड़ में शामिल लोग पेड़ पर चढ़कर उचक-उचक कर देख रहे थे।

* *

यह दूसरा अवसर था कि रैली के मंच पर बिहार के मुख्य मंत्री लालू जी को नहीं देखा गया क्योंकि आमंत्रण केवल समाज के नेताओं को ही मिला था। इसके पूर्व 12 जून, 93 को कुशवाहा रैली में भी लालू जी नहीं थे। इस अप्रत्याशित घटना को आम लोगों ने सराहा। हिन्दुस्तान

* *

गाँधी मैदान में मंच पर कश्मीर में अपहृत पूर्व विधायक पंकज कुमार सिन्हा की पत्नी प्रतिभा सिन्हा को जब कुछ बोलने के लिए आमंत्रित किया गया तो वह माइक के सामने आते ही फफक-फफक कर रो पड़ी। वह कुछ कह न सकी किन्तु उनकी आँखों के आँसू ने मानो सब कुछ कह दिया। मंच पर चन्द मिनट के लिए सन्नाटा-सा छा गया। कुछ ही देर बाद मंच से सटे नौयुवक जोर-जोर

से नारे लगाकर पंकज की रिहाई की मांग करने लगे और वे तब शांत हुए जब आयोजकों ने उन्हें मुक्त कराने को लेकर एक प्रस्ताव पारित कराने का आश्वासन दिया । हिन्दुस्तान

****

खुफिया शाखा के आरक्षी उपमहानिरीक्षक आशीष रंजन सिन्हा भी मंच पर कुछ क्षण के लिए दिखाई पड़े । उनकी अधिवक्ता पत्नी अनिता भी मंच पर कुछ क्षण के लिए आईं और अपार भीड़ का नजारा देखकर नीचे उतर गईं । श्री सिन्हा मंच पर अगली कतार में बैठे सांसद जोड़ी नीतीश कुमार और वृषिण पटेल के कान में कुछ फुस-फुसाकर मंच से उतर गये । हिन्दुस्तान

****

कुर्मी चेतना महारैली का नजारा देखने के लिए प्राय: सभी राजनीतिक दलों के जिन नेता, मंत्री तथा सरकारी पदाधिकारियों को गाँधी मैदान का चक्कर लगाते देखा गया उनमें पूर्व सहकारिता मंत्री रामदेव सिंह यादव पूर्व मंत्री नरेन्द्र सिंह, भाजपा विधायक सुशील कुमार मोदी, विधायक रामाधार पासवान तथा जद (ज) नेता शिवानन्द तिवारी प्रमुख थे । हिन्दुस्तान

****

मंच के उपर और मुख्य प्रवेश द्वार पर छत्रपति शिवाजी का आकर्षक कट आउट लगाया गया था तथा गाँधी मैदान और उसके आस-पास सरदार पटेल, शहीद रामानन्द सिंह, शहीद राजेन्द्र सिंह, शहीद रामगोविन्द सिंह, शहीद निर्मल महतो, शहीद शक्ति नाथ महतो तथा विनोद बिहारी महतो के कट आउट भी देखते बनते थे तथा लोगों को देशभक्ति की प्रेणा दे रहे थे । हिन्दुस्तान

****

The organisers were having tough time keeping out unwanted leaders from the Stage and many a times they were seen pleading to get them off the Stage in the name of maintaining the dignity of the Kurmis. At one time a Minister of state who was supposed to be staunch supporter of Bihar CM was not at all allowed to inter into the main spectrum. The Times of India

****

The crowed which started pouring in largely a disciplined crowd raising slogans on chharapati Shivajee and Sardar Patel. Rarely was a slogan in support of an individual political leader. The Times of India

◆◆

The 'maharally' was the culmination of a historical process of the creation of a peasant caste-class identity and which, in the present context, even seeks to transcend that identity and get into other 'modern' occupations.

The Times of India

◆◆

☆✻☆✻☆

महारैली पत्र-पत्रिकाओं की नजर में

बिहार राज्य कुर्मी चेतना महारैली को देश-विदेश के संचार माध्यमों ने जिस मुक्त कंठ से सराहा है तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं ने जिस प्रमुखता से छापा है उसे जन-जन तक पहुँचाना मैं अपना दायित्व समझता हूँ क्योंकि ऐसी हर सम्भावना है कि महारैली के हर पहलू पर पत्र-पत्रिकाओं में की गई टिप्पणियां तथा उसके विश्लेशण से सब लोग अवगत नहीं हुए हों । उदाहरण के लिए बी. बी. सी. ने महारैली में शामिल हुए लोगों की संख्या तथा विशेषता बताते हुए कहा कि भारत के किसी कोने में आज तक न तो ऐसी रैली देखी गई और न सुनी गई । संख्या के बारे में उसने कहा कि 12 फरवरी को पटना के गाँधी मैदान तथा उसके चारों ओर की सड़कों पर लगभग ग्यारह लाख लोग और पटना की विभिन्न सड़कों पर ग्यारह लाख से कम नहीं थे ।

नवभारत टाइम्स -इसी प्रकार दूसरे दिन, 13 फरवरी, 94 को नवभारत टाइम्स के स्थानीय संपादक श्री अरूण रंजन को जब मैंने 'नोट बुक से' स्तम्भ में 'शह !' शीर्षक से उनके विशेष सम्पादकीय के लिए आभार व्यक्त किया तो जो कुछ उन्होंने मुझे दूरभाष पर कहा उसे जस-का-तस आप पाठकों के अवलोकनार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है -

उन्होंने कहा "सिद्धेश्वर जी यदि पटना के नागरिकों को यह पता होता कि यह महारैली इतनी शालीन तथा अनुशासन प्रिय होगी तो सच मानिए यहाँ की जनता महारैली में आये लोगों पर फूलों की वर्षा करती ।"

इतना ही नहीं यह तो उन्होंने मुझे दूरभाष पर कहा, पर जो कुछ उन्होंने अपने विशेष संपादकीय में लिखा वह तो और बेजोड़ है । मुझे तो उसके एक-एक शब्द अच्छे लगे हैं, शायद आप पाठकों को भी भाये ।

तो देखिए उनके भाव को जिसे हू-ब-हू यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है -

- नोट बुक से -

13 फरवरी, 1994 **शह !** प्रथम पृष्ठ

❒ अरूण रंजन

यह 1994 की सबसे बड़ी महारैली थी । अरसे बाद ऐतिहासिक गाँधी मैदान ने विशिष्ट गुणों वाली एक रैली का लुप्त स्वाद चखा । महज जन बल नहीं जन बल के साथ चेतना के समिश्रण ने गाँधी मैदान में 1974 जैसी मिनी फिजा पैदा कर दी । यह गैर सरकारी आयोजन था । भीड़ स्वतः स्फूर्त थी । तनी मुट्ठी में अर्थवान नारों में आक्रामकता थी । किन्तु मन और दिमाग नियंत्रित था । भारी भीड़ के बावजूद राजधानी में ट्रैफिक जाम न्यूनतम हुआ । माथे पर केसरिया पट्टी बांधे नवजवानों ने ट्रैफिक बंदोबस्त बखूबी किया । अन्य रैलियों में नेता का भीड़ पर कब्जा दिखता था । इस भीड़ ने नेताओं को भी नियंत्रित कर रखा था ।

कुर्मी महारैली का उद्देश्य एकता और चेतना प्रदर्शित करना था । इसने शांति पूर्ण ढंग से जातीय अस्मिता झलकायी । इसी बहाने सफल राजनीतिक शक्ति प्रदर्शन भी किया । रैली के अर्थवान नारों में चुनौतिपूर्ण बुद्धिमता की पेशकश थी । साथ ही नये समीकरण और धूर्वीकरण की आसन्न धमक भी ।

मंच पर वक्ताओं ने "जात" की जगह "समाज" शब्द का प्रयोग किया । देशहित, राजहित और समाजहित की समवेत बात की गई । उँची जातियों के खिलाफ परम्परागत विष वमन भी नहीं हुआ । बल्कि चुटीले ढंग से कहा गया कि सभी दलों के नेतृत्व में "ब्राह्मणवादी संस्कार" भरा हुआ है ।

लगता है, रैली के नेतृत्व और लाखों भागीदारों का फलक व्यापक था । इक्के-दूक्के क्षेत्रीय नेताओं के जिन्दाबाद की बजाय भीड़ का केन्द्रीय नारा था-हमारा नेता कैसा हो, शिवाजी-पटेल जैसा हो ।

व्यक्तिवादी मुखापेक्षी राजनीति, राजनीतिक लम्पटता और माफियावाद के राजनैतिक दर्शक के युग में यह रैली जाने-अनजाने एक आतंकवाद को भी फाड़ गई । इस रैली ने विकल्प की राजनीति में गंभीरं शुरूआत भी की । इसलिए सड़कों

के किनारे खड़े अन्य समुदाय के दर्शकों की आँखों में सराहना का भाव लगता था । लगता है, कुर्मी नौजवानों के निडर चेहरों में लूटी पिटी हुई कुछ अन्य अवाम अपना अक्स ढूंढने की कोशिश करेगी ।

रैली की सफलता ने रैली के समक्ष ही जबरदस्त चुनौती खड़ी कर दी है । आने वाले दिनों में आयोजकों एवं नेताओं को सामाजिक सुधार के आन्दोलन के अलावा सुचिंतित राजनीतिक दर्शन का फलसफा भी देना होगा । अन्य समुदायों को भी मान-इज्जत देना, उनका विश्वास अर्जित करना, उन्हें ठेस नहीं पहुँचाना, जागृत, हिरावल समुदायों का पहला नैतिक दायित्व है । यह अत्यंत कठिन आत्म नियंत्रण और उदारता से ही संभव है । जातीय अस्मिता को जगाना और चरम जातिवाद से समाज को धौंसाने में फर्क है । आज बिहार के समाज में इसी वजह से गजब की घुटन और सडांध है । प्रगतिशील कृषक, बौद्धिक, नौकरीपेशा, किंचित सम्पन्न कुर्मी समुदाय को इसमें फूंक-फूंक कर पहल करनी होगी ।

इस रैली ने महीन बदलाव की नयी प्रक्रिया में उत्प्रेरक का काम किया है । इसने एकल और चरम जातिवाद पर घनचोट की है । हरिजन और मुस्लिम समीकरण से इसकी पाट संभव नहीं है । इस राज्य में उत्तर भारत में, जो पिछड़ा अभ्युदय हुआ, उसमें निःसंदेह कुर्मी समुदाय ने हिरावल भूमिका अदा की थी । इस स्वाभिमानी समुदाय ने अपनी उपेक्षा को नकार दिया है । अब तो बात दूर-दूर तब जायेगी । संभवत: कुछ अन्य समुदाय एवं समूह जागृत कुर्मी समुदाय में अपना नेतृत्व ढूँढे । ऐसी एक मानसिक सोच का धरातल भी विकसित होने लगा है ।

आज लालू प्रसाद ने अपने अल्प और धुंआधार राजनीतिक जीवन को सबसे बड़ी भूल जग जाहिर कर दी है । आज उनकी जबरदस्त राजनैतिक हार हुई है । इस हार से वे सबक सीखें । अपने समर्थकों को बौखलाने से रोकने, बेवजह जवाबी रैली करने की बजाय आज उनके लिए एकांत में खूब मनन करने का सूअवसर है । यादव-कुर्मी के कंक्रीट धरातल पर जो पिछड़ा अभ्युदय आधा परवान चढा था, नव दरबारी संस्कारों ने उसमें जबरदस्त दरार डाल दी है । आज उदीयमान बादशाहत को उसके बागी बजीरियत ने शह दी है । इसके पूर्व की शतरंजी चाल घात में तो प्यादें और घोड़े सामने आए थे, सो पिट लिए थे ।

कुर्मी महारैली में सर्वदलीयता अथवा निर्दलीयता का पुट भी चौकाने वाला राजनैतिक तत्व है । जनांदोलनों के दिग्दर्शक जानते हैं कि इससे एक मिनी

आन्दोलन भी पैदा किया जा सकता है । अस्सी के दशक में झारखंड आन्दोलन में कुर्मी मूल के बीजारोपन से राजनीतिक वट वृक्ष रोपा था । लेकिन उन्नत सांस्कृतिक निकास द्वार नहीं मिलने के कारण उक्त प्रयोग में आज विखंडन और मृतता -बोध का भाव है । वैसे भी किसी सामाजिक राजनीतिक नवजागरण को, लगातार दूध पिलाते रहना, उसे अन्तःपुर और शिखर राजनीति के प्रपंचों से बचाते रहना, फिर पालना पोसना, महत्वाकांक्षी ममत्वों की अग्नि परीक्षा होती है ।

आज से चाहे अनचाहे, बिहार की तूफानी राजनीति में विकल्प के नेता, विपक्ष के नेता कुर्मी समुदाय को ही बनना पड़ सकता है । अपनी जनता द्वारा प्रदत्त इस तख्ते-ताऊत को संभाले रखना बिजली के नंगे तारों को पकड़े रखने जैसा जोखिम भरा काम तो है ।

"नवभारत टाइम्स" ने अपने पत्र के सुर्खियों में लिखा -**"अपनी अस्मिता व राजनीतिक पहचान के लिए कुर्मी महारैली ने सत्ता पर घनचोट की ।"**

चेतना विचारधारा प्रवेशांक - पटना, दिनांक 12 फरवरी ,1994, तीन बजे अपराह्न

- प्रथम पृष्ठ -

"सिद्ध हो गया महारैली नहीं महारैला

गाँधी मैदान जन सैलाब से लबालब

आयोजकों का दावा-दस लाख से ज्यादा लोग"

एकता, सद्भावना एवं एक सुदृढ़ और समतावादी सामाजिक व्यवस्था के निर्माण के आह्वान के साथ आज यहाँ गाँधी मैदान में बिहार राज्य कुर्मी चेतना महारैली शुरू हुई । कुर्मी समाज ने इस रैली में रिकार्ड उपस्थिति दर्ज कराकर अपनी शक्ति का सफल प्रदर्शन किया । इस महारैली में अपने तमाम राजनीतिक भेदभाव और वैचारिक अन्तर्विरोधों को भुलाकर विभिन्न राजनीतिक दलों ने भागीदारी निभायी । महारैली में बिहार के अलावा अन्य प्रदेशों के भी कुर्मी नेताओं ने भाग लिया ।

जनशक्ति - पटना, दिनांक 13 फरवरी, 94 प्रथम पृ० (सुर्ख)

"सत्ता सामाजिक न्याय में प्रभावी हिस्सेदारी दो वरना ....

कुर्मी चेतना महारैली की चेतावनी"

इसने इस रैली को विराट महारैली कहा ।

आज-पटना दिनांक 13 फरवरी आवरण पृष्ठ (सूर्ख)

"जबर्दस्त एकजुटता दिखाई कुर्मियों ने"

"सत्ता में भागीदारी के लिए संगठित संघर्ष का आह्वान दलित रैली से मिली आशा धूमिल हुई कुर्मी रैली से । आज की कुर्मी चेतना महारैली ने मुख्य मंत्री लालू प्रसाद को उतना ही निराश किया, जितना निराश उनके विरोधियों ने तीस जनवरी वाली दलित चेतना महारैली से हुई होगी । मुख्य मंत्री की निराशा का सबब यह तो हो ही सकता है कि आरक्षण पर धुआँधार भाषण होने के बावजूद कोई उनका नाम लेनेवाला नहीं था । एक समय ऐसा भी आया जब मुख्य मंत्री के मित्र माने जाने वाले सांसद नीतिश कुमार भी उन्हें धमकाने लगे ।"

The Sunday Times of India

Patna, 13 Feb. 1st Page

Kurmi Leaders call for share in power.

The massive state level Kurmi Chetna Maharally organised ended on a Sour note. Enranged at the mention of the name of the Bihar Chief Minister, Mr. Laloo Prasad Yadav, and the suggestion of independent M.L.A. Mr. Madhu Singh that the C.M. has been a prime works of unity among the backward castes in the state, the Kurmi youths forced the organisers to stop midway the speech of Mr. Singh.

The irate youth calmed after Mr. Singh apologised for mentioneing the name of the Chief Minister. The Kurmi Maharally had been organised to parade the collective strength of the Kurmi, piqued as they have been by the recent policies of the Chief Minister with regard to the resarvation for the Kurmis.

The Message

The message conveyed by the rallyists was clear cut : that their drive should not fall short of grabbing the power in the state eapital. In effect they indicated that the Bihar Chief Minister, Mr. Yadav had ingored their collective aspirations.

But for the present, the Kurmis appeared to have been inbued with the brew that " they alone could decide which of the backward leader could rule Bihar and none could do so at the cost of Kurmis."

The Times of India, Patna, February 16 (News Analysis) By Arvinda N. Das

The maha-rally of Kurmis held in Patna's Gandhi Maidan last week represented a qualitative stop in the process of forging on ethnic identity based on a peasant caste configuration that is seen to spread across northen and western India. It also signalled that the configuration has now attained self-confidence to seek to play a dominant role in national politics. Indeed, the maharally has added a new bilingual term to political discourse in both English and Hindi.

The rally was addressed by a galaxy of leaders cutting across party lines: C.P.I., Janta Dal, BJP, VHP and Congress politicians belonging to Kurmi caste vied with each other in asserting their jatte identity.

No slogans were raised against upper castes or aganist any other castes.

The Hindustan Times, Patna, Feb. 20 Sunday Special

By Amitabh Baxi and Anil Kumar - Head Line - Kurmi out to Carve a niche for themselves.

Kurmis today stand as a force to reckon with. And lif the tone and teinor witnessed at the recently held mamoth Kurmi Chetna Maharally is any indication, the caste is one to carve a niche for themselves in the bastion of Mr. Laloo Prasad Yadav

A caste with a glorious trade time which provided able

and effective ledership to the country in the past they indeed form an important part of the intellectual class.

However, their affluence and inclusive in the list of resarvation they are also undergoing a metamorphosis. An otherwise peaceful and humble caste the Kurmis have finally thrown the gauntled to the power that be demanding among other things a proportionate representation in power sharing to remove in impediments in their development.

Kurmi Chetna Maharally in Patna has signalled that this formidable intermediary caste has woken up to shake off its hither to role of playing the second fiddle to the rulers.

The So called social justice principle of the present goverment is a great hoax. Is the Laloo move to forge a Muslim-Yadav-Harijan (MYH) combination not a total denial of the importance of Kurmis, the most dominant caste among the backward community.

The deep-rooted conspiracy has been hatched to leave behind Kurmis who are viewed as the main cointendrs for power by the Yadava by virtue of their being comparatively more educated

The Hindu dt. 13 Febuary, 94

Head Line - Kurmis Exhibit might.

The Kurmis affluent caste and a farming community staged a massive rally at the sprawlling Gandhi Maidan which turned out to be a record breaking congregation. Never before Patna had witnessed such a huge turn out filling up not only the entire Maidan but also all the peripheral roads.

Ostensibly the main purpose of the rally was to signal the breaking away of the Kurmis from the ruling Janata Dal.

☆✻☆✻☆

बिहार राज्य कुर्मी चेतना कन्वेंशन

1 मार्च, 1994 की बैठक

बिहार राज्य कुर्मी चेतना महारैली के मंच से व्यक्त विचारों के आलोक में विगत 19 मार्च, 1994 को पटना के दारोगा प्र० राम पथ स्थित पटेल सेवा संघ, बिहार के कार्यालय-प्रांगण में समाज के सक्रिय कार्यकत्ताओं एवं सामाजिक संगठनों से जुड़े सेवियों की एक बैठक आयोजित की गई जिसमें महारैली के आय-व्यय का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया । बैठक में उपस्थित लोगों ने महारैली की समीक्षा भी की । विधायक सतीश कुमार, डा० वीरेश कुमार सिन्हा, श्री ब्रह्मदेव पटेल, प्रो० उषा सिन्हा, प्रो० लालकेश्वर प्र० सिन्हा तथा अन्य कार्यकर्ताओं ने महारैली की समीक्षा में भाग लेते हुए जहाँ संतोष व्यक्त किया वहीं उसकी कई खामियां की ओर भी लोगों का ध्यान आकृष्ट किया । महारैली के प्रवक्ता श्री सिद्धेश्वर ने कहा कि जिस प्रकार संचार माध्यमों तथा भारत की तमाम जनता ने महारैली की मुक्त कंठ से सराहना की है, उससे कुर्मी समाज का कद बढ़ा है, उसकी प्रतिष्ठा बढ़ी है और साथ ही लोगों की अपेक्षाएं भी हमसे हुई हैं । ऐसी स्थिति में बिहार के नव निर्माण के लिये इस समाज पर और अधिक जिम्मेदारी आ गई है । इस दायित्व के निर्वाह के लिये हमें कमर कसकर आगे आना होगा, उन्होंने कहा ।

इस बैठक के अन्त में सर्व सम्मति से यह निर्णय लिया गया कि आठ एवं नौ मई, 1994 को स्थानीय कुर्जी स्थित ब्रजकिशोर मेमोरियल हॉल में कुर्मी चेतना कन्वेंशन का आयोजन किया जाय जिसमें 5000 प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया जाय । पटना जिला छोड़कर और सभी जिलों से कम-से-कम बीस प्रतिशत महिलाओं की उपस्थिति के लिये आवश्यक कदम उठाया जाय । इस आशय का भी निर्णय उक्त बैठक में लिया गया ।

कन्वेंशन

बिहार राज्य कुर्मी चेतना महारैली में पारित प्रस्ताव तथा लिये गये संकल्प

को मूर्त रूप देने के लिए तथा 19 मार्च, 94 की बैठक के निर्णयानुसार विगत 8 एवं 9 मई, 1994 को पटना के कुर्जी स्थित ब्रज किशोर मेमोरियल हॉल में बिहार राज्स कुर्मी चेतना कन्वेंशन का आयोजन किया गया जिसमें बिहार के प्रत्येक जिले से लगभग तीन हजार प्रतिनिधियों ने भाग लिया । दोनों दिन के कई सत्रों में लगातार कुर्मी समाज में खासकर महारैली के बाद आई चेतना पर प्रसन्नता व्यक्त की गई ।

विचार के लिये प्रस्तावित मसौदा

प्रारम्भ में कन्वेंशन के संयोजक विधायक श्री सतीश कुमार ने कन्वेंशन में विचार के लिये प्रस्तावित मसौदा प्रस्तुत करते हुए कहा कि 12 फरवरी की महारैली की सफलता जिस ऊँचाई को छूने में कामयाब हुई है, आपके और आपके लोगों के अलावे वैसे तमाम लोग जो पीड़ित हैं, शोषित हैं, भयाक्रान्त हैं आपकी तरफ एक नई आशा की किरण के रूप में निहार रहें हैं, पूरे बिहार एक ऐसे सामाजिक राजनीतिक परिवेश के दौर से गुजर रहा है मानों किसी चीज की तलाश हो । सामाजिक न्याय की लड़ाई अपने मंजिल मुकाम से कोसों दूर है । समाजकि न्याय के हकदार आज भी अगड़ी पिछड़ी की मानसिकता से घिरे हुए हैं । ऐसी स्थिति में आपके प्रति लोगों का नया विश्वास जगा है , उसके अनुरूप जहाँ सत्ता में हमारी शक्ति और शौर्य के हिसाब से हमें जो हिस्सेदारी नहीं मिल पाई है, उसके लिए रास्ता आप तय करेंगे । रास्ता से मतलब साफ है कि रैली के संदेश के आलोक में मंजिल तक पहुँचने के लिए कौन सा सामाजिक–राजनीतिक दिशा अख्तियार किया जाय और दिशा को तय करने के लिए कैसा संगठन का ढाँचा खड़ा किया जाय जो लवकुश की एकता की घुरी के बुनियाद पर व्यापक गोलबन्दी करने में सफल हो सकें ।

स्वागत भाषण

इसके पूर्व सुप्रसिद्ध उद्यमी तथा कन्वेंशन के स्वागताध्यक्ष श्री विनय कुमार सिंह ने मान्य अतिथियों तथा विभिन्न जिलों से आये प्रतिनिधियों का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए कहा कि आज समय की पुकार है कि हम अपने गौरवमय अतीत के अनुरूप आचरण कर सामाजिक एकता स्थापित करें तथा राष्ट्र की मुख्य धारा से जुड़कर इसके निर्माण में जुट जाएं ।

उद्घाटन

कन्वेंशन का उद्घाटन करते हुए प्रमुख समाजवादी नेता तथा बिहार के पूर्व मंत्री श्री भोला प्र० सिंह ने आरक्षण के सवाल पर सरकार की ढुलमुल एवं अन्तर्विरोधी नीति पर क्षोभ व्यक्त किया तथा कुर्मी जाति को आरक्षण की सूची में शामिल किये जाने अथवा नहीं किये जाने की भ्रांति को बिहार तथा केन्द्र सरकार की एक साज़िश की संज्ञा दी ।

अध्यक्षीय भाषण

इस चेतना कन्वेंशन के कई सत्रों की अध्यक्षता करने वालों में प्रख्यात चिकित्सक डा० एस० एन० आर्य, विधायक सुधीर महतो, प्रो० गणेश मेहता ने भी अपने उद्‌गार व्यक्त किये । डा० आर्य ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के साथ-साथ अज्ञानता, अशिक्षा तथा रूढ़िवादिता को भी दूर करने का आह्वान किया । उन्होनें कहा कि शिक्षा के बदौलत ही कुर्मी समाज ने आज तक प्रगति की है तथा समाज में अपनी पहचान बनाई है । फिर भी शिक्षा खासकर महिलाओं की शिक्षा पर और ध्यान देने की आवश्यकता है ।

विधायक सुधीर महतो ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि छोटानागपुर में पिछड़े समुदाय को स्थानीय स्तर पर तृतीय एवं चतुर्थ वर्ग की नौकरियों में आरक्षण प्रायः शून्य हो गयी है क्योंकि क्षेत्र के आदिवासी को पैतालीस प्रतिशत आरक्षण है जिसके परिणामस्वरूप कुर्मी (महतो) समाज के बेरोजगार नौजवान भी नौकरी पाने से वंचित हैं । उन्होंने इसके निदान के लिये आरक्षण की पचास प्रतिशत सीमा को बढ़ाने की माँग सरकार से की ।

निर्णय

कन्वेंशन के दूसरे दिन के प्रथम सत्र का संचालन जहाँ श्री सिद्धेश्वर ने किया वहीं दूसरे सत्र का श्री राजीव पटेल ने । दोनों दिनों के सत्र में विभिन्न जिलों से आये प्रतिनिधियों में से लगभग डेढ़ सौ लोगों ने सामाजिक तथा राजनीतिक एवं आर्थिक मुद्दों पर अपने अपने विचार व्यक्त किये । अन्त में सर्वसम्मति से एक राज्य स्तरीय संगठन के गठन का निर्णय लिया गया जिसका नाम "बिहार राज्य कुर्मी चेतना मंच" रखा गया । यह भी निर्णय लिया गया कि मंच के सदस्यों

की कुल संख्या दो सौ इकावन होगी जिसमें से पचीस महिलाओं, प्राध्यापकों, साहित्यकारों, संस्कृति-कर्मियों, अधिवक्ताओं, अभियन्ताओं तथा पत्रकारों के प्रतिनिधित्व के लिए सुरक्षित रहेंगे । सभी जिलों में बैठक आयोजित कर प्रतिनिधियों के चयन का भार मुख्य रूप से विधायक सतीश कुमार को दिया गया जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया ।

☆✻☆✻☆

बिहार राज्य लवकुश कन्वेंशन

पृष्ठ भूमि

12, जून 93, की बिहार राज्य कुशवाहा महारैली, बिहार राज्य कुर्मी चेतना महारैली तथा 8 एवं 9 मई, 94 को आयोजित बिहार राज्य कुर्मी चेतना कन्वेंशन- इन तीनों में लगभग एक जैसे विचार उभरकर आए कि कुर्मी तथा कुशवाहा की एकता बिहार की डूबती नाव को किनारे लगाना आज आवश्यक है । यह बात भी नहीं कि इन आयोजनों के पूर्व इसकी आवश्यकता नहीं महसूस की गई थी । बहुत पहले 'त्रिवेणी संघ' में भी दोनों साथ थे किन्तु बाद के दिनों में नेताओं की तिकड़मबाजी तथा स्वार्थपना के चलते वह प्रयास मंजिल तक पहुँचने में सफल नहीं हो पाया । फिर भी विभिन्न सामाजिक संगठनों तथा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के प्रयास से दोनों की एकता की दिशा में पहल होता रहा । खगड़िया में विगत 26 अगस्त को आयोजित लवकुश सम्मेलन उसका ताजा उदाहरण है । इसके अतिरिक्त पटना मुँगेर, मुजफ्फरपुर आदि जिलों में भी दोनों समाज के लोग प्रायसरत रहे किन्तु आज के तेजी से बदलते सामाजिक-राजनीतिक परिवेश में कुर्मी-कुशवाहा की एकता निहायत जरूरी दीख रही है । जिसके और कारण चाहे जो हों अभी के हालात में अपने मान-सम्मान तथा अपनी अस्मिता की पहचान के लिए दोनों की सामाजिक आर्थिक तथा राजनीतिक पीड़ा एक जैसी है, दोनों की छटपटाहट एक ही मंजिल तक जाने की है । इसके लिए दोनों समाज को कदम-से-कदम मिलाकर चलना होगा । लवकुश कन्वेंशन इसी दिशा में एक सार्थक कदम है ।

आयोजन

विगत ग्यारह सितम्बर, 1994 कों पटना के श्रीकृष्ण स्मारक भवन में एक आयोजन किया गया जिसमें बिहार के कोने-कोने से लगभग दस हजार प्रतिनिधियों ने भाग लिया सचमुच उस दिन स्मारक भवन का सारा वातावरण एकता की गुँज से गुँजायमान हो उठा था और हो भी क्यों नहीं, कुर्मी तथा कुशवाहा

दोनों का रहन-सहन एक, वेश भूषा एक, खान-पान एक, सभ्यता-संस्कृति एक तथा दोनों का पेशा भी एक। पता नहीं इतिहास के किस मोड़ पर दोनों अलग-अलग हुए। कहा जाता हैं कि दोनों जुड़वा भाई थे। इतिहास पर शोध जरूरी है कि आखिर लव-कुश के हम सब वंशज कैसे है ? और यदि हैं तो राम के साथ भी हमारा संबंध स्वाभाविक बनता है किन्तु इस सवाल पर हम चुप्पी साध बैठते हैं। इतिहासकारों के द्वारा इस पर पूरी छान-बीन कर उसकी असलियत से आम लोगों को अवगत कराना आज आवश्यक हो गया है। खैर, इस प्रश्न के हल का दायित्व हम इतिहासकारों पर छोड़ें। बहरहाल इन दोनों समाज की हर दृष्टि से समानता तथा बिहार की निरंतर बिगड़ती दशा ने राष्ट्रीय चेतना से रससिक्त कुर्मी तथा कुशवाहा समाज को बाध्य किया है इस पर विचार करने को। इसी भावना से प्रेरित होकर आज का यह कन्वेंशन आयोजित है।

उद्घाटन

लवकुश एकता के प्रतीक तथा बिहार राज्य कुर्मी सभा के अध्यक्ष **डा० मोहन सिंह** ने कुर्मी तथा कुशवाहा समाज की एकता के दीप प्रज्वलित कर समारोह का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण मे ढेर सारे आँकड़े प्रस्तुत करते हुए डा० साहब ने यह आशा व्यक्ति की कि आसन्न विधान सभा चुनाव दोनों समाज की अगुआई में यदि सभी दलित, पीड़ित, अत्यन्त पिछड़े तथा तथाकथित सवर्ण समाज के विचारवान एवं प्रगतिशील लोगों को साथ लेकर लड़ा जाय तो निश्चय ही सत्ता के शिखर पर बैठ बिहार को एक नई दिशा दी जा सकती है। उन्होंने कहा कि कुर्मी और कुशवाहा दोनों एक ही माँ के बेटे हैं।

स्वागत-भाषण

एक समय बिहार के लिट्ल लोहिया के नाम से प्रसिद्ध प्रखर समाजवादी नेता तथा बिहार के पुर्व मंत्री **भोला प्र० सिंह** ने कहा कि जो मसाल जली है, उस मसाल में सारे अवसरवादी जलकर राख हो जायेंगे। क्रीमी लेयर के सिद्धान्त को निराधार बताते हुए उन्होंने कहा कि सताईस प्रतिशत के बीच क्रीमी लेयर ढूंढ़ा जा रहा है तो क्या तेहत्तर प्रतिशत में क्रीमी लेयर नहीं हैं। मंच पर ही वे इतने उत्तेजित हो उठे कि क्रीमी लेयर की प्रति को उन्होंने तत्काल फाड़ डाला और उसे जला डालने की सलाह दी। कार्यकर्त्ताओं ने उसे उनकी सलाह पर मंच के पास ही जलाया जो धूआँ बनकर सत्ता में बैठे लोगों के मनसूबों को धूल-धूसरित

कर गया ।

नेताओं के उद्‌गार

जद (ज) सांसद **नीतीश कुमार** ने कहा कि मुख्य मंत्री लालू प्रसाद भ्रष्टाचार की ट्रेन पर चढ़कर बिना टिकट यात्रा कर रहे हैं और उन्हें बतौर दण्डाधिकारी पकड़ने का जिम्मा शकुनी चौधरी तथा सतीश कुमार पर है । उन्होनें कहा कि बिहार का राक्षसी राज से निजात दिलाने के लिए **शकुनी चौधरी** को जद(ज) में आ जाना चाहिए तथा दोनों मिलकर बिहार के विभिन्न जिलों की यात्रा प्रारम्भ करे, वे उनके पीछे-पीछे रहेंगे । आज के इस कनवेंशन की सफलता ने लालू प्रसाद की नींद हराम कर दी है । उन्होंने कहा कि समतामूलक समाज की स्थापना की दिशा में आनेवाली मुसिबतों से घबराने और डरने की जरूरत नहीं हैं । हमारा रास्ता सही है और हम मंजिल पर पहुँचेगे भी ।

विभिन्न जिलों से आये दोनों समाज के प्रतिनिधियों की मौजुदगी से श्रीकृष्ण स्मारक भवन खचा-खचा भरा था । उपस्थित लोगों का तेबर बिल्कुल सरकार विरोधी रहा और वक्ताओं ने लालू के खिलाफ जितना बोला, उसे वाहवाही भी उतनी ही मिली ।

कन्वेंशन के मुख्य वक्ता तथा बिहार विधान सभा के सदस्य **शकुनी चौधरी** ने कहा की कुर्मी-कोयरी में कोई फर्क नहीं है, जरूरत सिर्फ मिलने की है और इसके बाद बिहार की राजनीति हमारे आगे-पीछे रहेगी । उन्होनें कहा कि हमारे भीतर इतनी ताकत है कि पत्थर में भी हरियाली पैदा कर दे । उन्होंने कहा कि बिहार में करीब पचास ऐसे विधान सभा क्षेत्र हैं जहाँ बाहुल्य लव-कुश का है पर यह सीट आरक्षित है । उन्होंने मुख्य चुनाव आयुक्त से इसे अनारिक्षत करने की अपील की । उन्होंने पुनः कहा कि यदि हमारे नौजवान बहादुरी से काम लें जो अगली मर्तबा करीब एक सौ सीटों पर हमारा कब्जा होगा । राजनीतिक क्षितिज पर आगे आने के लिए महिलाओं को भी आगे लाना आवश्यक है ।

प्रारम्भ में कन्वेंशन में विचार के लिए प्रस्तावित मसौदा प्रस्तुत करते हुए विधायक **सतीश कुमार** ने कहा कि सामाजिक न्याय की लड़ाई अपने मंजिल मुकाम से कोसों दूर है । इस सामाजिक न्याय के हकदार आज भी अगड़ी-पिछड़ी की मानसिकता से घिरे हैं । आज का यह कन्वेंशन सामाजिक और राजनीतिक दिशा तय करने के लिए बुलाया गया है, ताकि दूसरी जाति के लोग कोयरी-कुर्मी के बल पर अपनी राजनीतिक रोटी न सेंक सकें । इन जातियों के लोग अपनी

शक्ति को पहचानें ।

अब वक्त आ गया है कि वे अपने हक के हिसाब को चुकता करें । दोनों जातियों के बीच रोटी-बेटी के संबंध पर बल देते हुए **सतीश कुमार** ने कहा कि लव-कुश के वंशजों को एकीकरण के लिए कुरीतियों से दूर रहना होगा ।

सामाजिक प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए साहित्य एवं समाज सेवी **सिद्धेश्वर** ने कहा कि समाज अन्ततः वही आगे बढ़ता है जिसमें अपने इतिहास का नीर क्षीर विवेक करने की क्षमता हो, अच्छाई को बनाए रखने और बढ़ाने का स्वभाव हो और बूरे पहलुओं से संघर्षरत रहने की इच्छाशक्ति हो ।

उन्होंने कहा कि आज की सामाजिक समस्याओं में तिलक-दहेज,बेमेल विवाह, विधवा-विवाह का न होना, शाखान्तर शादी का होना, शादी-विवाह तथा अन्य ऐसे संस्कारों पर आडम्बर पूर्ण खर्च, आपसी वैमनस्यता आदि कुर्मी तथा कुशवाह दोनों समाज की प्रगति में बाधक सिद्ध हो रहें हैं और इनमें दहेज की समस्या सर्वाधिक विकट रूप धारण कर चुकी है । कारण यह कि आज दहेज को सामाजिक प्रतिष्ठा एवं मान-मर्यादा का पर्याप्त मान लिया गया है परिणाम यह हुआ है कि अनेक छोटी और अल्पसंख्यक जातियां भी दहेज की कुरीती की शिकार होती जा रही हैं । नव वधुंओं के साथ अत्याचार दिन-दिन बढ़ता ही जा रहा है । ऐसी स्थिति में लव-कुश समाज को गंभीरता से इस पर विचार कर इसका निदान ढुढ़ना होगा तभी सामाजिक एकता की बात सम्भव है ।

राजनीतिक प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए जद (ज) नेता **नरेन्द्र सिंह कुशवाहा** ने वर्त्तमान सरकार की विफलता पर विस्तार से प्रकाश डाला । उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है जब कुर्मी कुशवाहा समाज को अपना वाजिब हक पाने के लिए एक होना होगा तथा आसन्न विभान सभा चुनाव में अपना जौहर दिखलाना होगा । कोई कारण नहीं कि यदि हम सब मिलकर चलें तो सत्ता के शिखर पर हम बैठ नहीं सकते हैं ।

वक्तृत्व कला के धनी एवं युवानेता **रामनाथ विद्यार्थी** ने कृषि पर प्रस्ताव प्रस्तुत किया । उन्होंने कृषि को उद्योग का दर्जा देने की माँग करते हुए फसल बीमा योजना लागू करने की भी जोरदार शब्दों में माँग की ।

अखिल भारतीय कुशवाहा महासभा के संरक्षक तथा समाज सेवा में अनवरत प्रयासरत **बनारसी सिंह विजयी** ने कहा कि ढोंगा और मिथ्याडंबर का जाल आज

भी बरकरार हैं, उसमें नये नये फंदे लगाने का कार्य आज भी चल रहा है, यद्यपि बीच बीच में वह जाल काफी कटफट चुका हैं । उन्होंनें कहा कि हमारे देश में पुरोहितवाद की मुख्य सहायिका जन्म जात वर्ण-व्यवस्था है, इसे जन्म ही इस लिए दिया गया, जिससे ब्राहमण वर्ग के विशेष अधिकार सुरक्षित रहें । इसी षड्यंत्र के फलस्परूप जन्मजात वर्ण व्यवस्था की नींव पड़ी । तत्पश्चात् धर्मशास्त्रों के अध्ययन व मनन का अधिकार ब्राहमणों तक ही सीमित कर दिया गया । अतएव जब तक हम पुरोहित वाद के इस मायाजाल से मुक्त नहीं होते, तब तक हमारी उन्नति की गति अवरूद्ध ही रहेगी ।

शोषित समाज दल के नेता **प्रो० जयराम प्र० सिंह** ने कहा कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सारे देश में आपाधापी, भ्रष्टाचार, भाईभतीजावाद और बेईमानी का राज्य हो गया, ईमानदार , कर्मनिष्ठ और वफादार व्यक्ति का जिंदा रहना आज असम्भव हो गया है । संविधान प्रदत अधिकारों का आज हनन हो रहा है । ऐसी विकट परिस्थिति में कुर्मी कुशवाहा को साथ मिलकर समय के साथ साक्षातकार करना आज समय की माँग है ।

अध्यक्षीय-भाषण

कन्वेंशन की अध्यक्षता बिहार के पुर्व मुख्य मंत्री **सतीश प्र० सिंह** ने की । उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि आज वह समय आ गया है कि हमलोग समाज की कुरीतियों के खिलाफ तथा राजनैतिक दाँव-पेंच के खिलाफ एक जुट होकर संघर्ष करेंगे । उन्होंने पुनः कहा कि समाज के अत्यन्त पिछड़े लोगों की दृष्टि हमारी ओर लगी है क्योकि हमारे समाज का यह गुण रहा है कि किसी का शोषण नहीं करना और जिनका जो सही है उन्हें दिलाने के लिए संघर्ष करना इसलिए राजनैतिक क्षेत्र में भी हम दोनों समाज के लोग वादा करते हैं कि समाज के अन्य लोगों को सही हक दिलाने और सही सम्मान तथा प्रतिष्ठा दिलाने का कार्य करेंगे । सभा संचालन में साहित्यकार **सिद्धेश्वर** ने अध्यक्ष को सक्रिय सहयोग प्रदान किया ।

पटना उच्च न्यायालय के अधिवक्ता **अरूण कुमार सिंह** ने जोरदार शब्दों में कुर्मी-कुशवाहा एकता की वकालत की । उन्होने कहा कि किसी कुर्मी को सताए जाने पर कुशवाहा को तथा किसी कुशवाहा को सताए जाने पर कुर्मी को पीड़ा अनुभव होने के बाद ही एकता संभव है ।

खगड़िया के प्रतिनिधि **कमल किशोर सिंह पटेल** ने उद्गार व्यक्त

करते हुए कहा की बिहार राज्य के सभी जिलों एवं प्रखंड स्तर पर लव-कुश संगठन बनाने की आज आवश्यकता है । इसके लिए समाज के प्रत्येक जागरूक सदस्य को अपने स्तर से भी प्रयास करना चाहिए ।

कन्वेंशन में और जिन सामाजिक नेताओं, कार्यकर्त्ताओं ने अपने विचार रखे उनमें अजय कुमार, राजेन्द्र प्र० वर्मा, प्रो० दिनेश प्रसाद, गजेन्द्र सिंह, अजय कुमार राकेट, संजय कुमार मंगलम्, प्रो० राजेन्द्र प्रसाद , धर्मेन्द्र पटेल, हरेन्द्र पटेल, उपेन्द्र नाथ सागर, शिव कुमार सिंह, डा० लखन लाल आरोही, आदि का नाम उल्लेखनीय है ।

धन्यवाद-ज्ञापन

अन्त में आयोजकों की ओर से प्रो० गणेश मेहता ने कन्वेंशन के मंच पर उपस्थित सभी मान्य अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए विभिन्न जिलों से पधारे प्रतिनिधियों को हार्दिक धन्यवाद दिया ।

☆❋☆❋☆

कन्वेशन में पारित प्रस्ताव

प्रस्ताव-1

लव कुश वंशियों का यह ऐतिहासिक प्रान्तीय कन्वेंशन, प्रान्त के कोने-कोने से आये संकल्पित लव कुश समाज के लोगों का अभिनन्दन करता है ।

लव कुश समाज हर दृष्टि से एक ही समाज है । हमारी परम्परा, हमारा धरोहर, हमारा इतिहास, हमारी एकता को उजागर (इंगित) करते हैं । इतिहास के थपेड़ों के कारण हम एक दूसरे से अलग-अलग पड़ गये थे । परन्तु हमारी आकांक्षाएं एक होने की हमेशा बनी रही । सोच-समझ, रहन-सहन, दुख-दर्द, वर्ण, जातिगत त्राशदी, घुटन, पीड़ा उपेक्षा हर स्तर पर एक हैं, इस सदी के प्रारम्भ से ही एक होने की आकांक्षा के फलस्वरूप शादी-विवाह, आपसी रिश्ता यदा-कदा होता रहा है । आज अब कोटि कोटि रिश्ते का जो अंकुर फुटा है यह आज प्रवाण चढ़ रहा हैं । बड़ी संख्या मे रिश्ते हो रहे हैं विशेष कर खगड़िया में सम्पन्न हुए सामुहिक विवाह वंदनीय है । लव-कुश का यह कन्वेन्शन आह्वान करता है कि अब लव-कुश समाज के बीच रोटी-बेटी का सम्बन्ध आम बात हो जाये और यह अपेक्षा रखता है कि इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु हर जिला में स्तरीय संगठन बनेगा जो बेटी-रोटी के रिश्ते को निर्णायक अंजाम तक पहुँचायेगा ।

प्रस्ताव -2

लव कुश वंशियों की आशा-आकांक्षा एवं उनके संघर्ष की कहानी को सार्वजनिक करने हेतु एक मासिक पत्रिका निकालने का प्रस्ताव पारित किया जाता है ।

प्रस्ताव -3

लव कुश की गतिविधियों को केन्द्रीत एवं संचालित करने हेतु एक लव कुश भवन निर्माण करने का प्रस्ताव पारित किया जाता हैं ।

प्रस्ताव -4

भूमिअर्जन के क्रम में सबसे अधिक भार लव कुश वंशियों पर पड़ता है । उनकी जमीन को मिट्टी के मोल अधिगृहित की जाती है और सरकार फिर जमीन को सोने के भाव से निष्पादन करती है । अतएव उनकी भूमिका मूल्य बाजार मूल्य के आधार पर निर्धारित हो ।

प्रस्ताव -5

लव कुश समाज के लोग प्रधानत: खेतीहर हैं । खेती उनके जीवन-यापन का साधन है । अत: कृषि को उद्योग घोषित किया जाए और उपज का लाभकारी मूल्य दिया जाय । खाद बीज, पानी और बिजली का सुलभ एवं सस्ता प्रबन्ध किया जाय । फसल बीमा योजना लागू करने का प्रस्ताव पारित किया गया ।

प्रस्ताव -6

राजनीति जन-जीवन का अनिवार्य क्षेत्र है । कोई भी समाज बिना राजनैतिक सोच, दिशा एवं दृष्टि के जीवित नई रह सकता । वर्ण विषमता का सबसे अधिक शिकार लव कुश समाज रहा है । इससे बड़ी क्या विम्डबना हो सकती है कि जिस समाज के पसीना से सारे देश का पेट-पलता हो वह वर्ण व्यवस्था की सीढी पर नीचे पदस्थापित हो और जो उसके श्रम का शोषण करता हो वह उच्च समझा जाता हो । इस अन्याय के विरूद्ध छटपटाहट इस समाज के लोगों में शाश्वत रही है । उसी छटपटाहट के फलस्वरूप ज्योतिबा फूले ने बगावत का बिगुल फूंका, शिवाजी ने रण की घोषणा की । ज्योतिबा फूले से लेकर शहीद जगदेव प्रसाद तक का संघर्ष उसी छटपटाहट की अनिवार्य अभिव्यक्ति है । ऐसा नहीं है कि हम सदा से आज की स्थिति में रहे हैं । चन्द्रगुप्त मौर्य, छत्रपति शिवाजी, सम्राट अशोक, लौहपुरूष सरदार पटेल आदि भारत के आकाश पर चमकने वाले लव कुश के वंशज रहें हैं । इतिहास साक्षी है कि जब सत्ता लव कुश वंशियों के हाथ में आयी वो भारत का र्स्वणिय युग रहा है । समता और समानता का युग रहा । वर्ण व्यवस्था ढीली पड़ी ।

आज लव कुश एकीकरण का जो अभियान आरम्भ हुआ है वह बिहार का ही नहीं बल्कि पूरे देश के भाग्य को बदल देगा । आज समाजिक न्याय को बाहरी-भीतरी दोनों तरफ से खतरा है । वर्णवादी लोगों के द्वारा भी हमारे हितों पर चोट हो रहा है अभी अंध जातिवादियों द्वारा हमारे हितों पर चोट हो रही है । हम संकल्प लेते हैं कि वर्णवादी शक्तियों एवं अंध जातिवादी शक्तियों के खिलाफ आवाज उठाएंगे ।

प्रस्ताव -7

लव कुश कन्वेन्शन आपसी सदभाव एवं प्रेम को कायम रखने के लिए तथा आपसी संगठन को दिन-प्रतिदिन सुदृढ़ करने हेतु राज्य एवं जिला स्तर पर "लव कुश सदभाव समिति" के गठन करने का प्रस्ताव पारित करता है ।

अब आगे क्या करना है

सत्ता की चुनौती स्वीकार करना

बिहार राज्य कुर्मी चेतना महारैली तथा लव-कुश कन्वेंशन ने रचा एक नया इतिहास जिसका सन्देश तथा संकल्प आनेवाले दिनों मे जन-मानस को आन्दोलित करता रहेगा बशर्ते कि उससे उपजी उर्जा का सही सही इस्तेमाल किया जाय।

आज सत्ता पाने अथवा उसमें प्रभावी भागीदारी की चुनौती काफी गहरी है और चुनौती जितनी गहरी होती है, उसका सामना करने की तैयारी भी उतनी ही गहरी चाहिए। महारैली तथा कन्वेंशन के बाद इस समाज के खासकर युवा वर्ग मे जो चेतना आई है, जो जागरूकता पैदा हुई है, उसे देखकर ऐसा लगता है कि लोग चुनौती का सामना करने को आतूर हैं। जरूरत है तो केवल इस बात की कि उन्हें उचित मार्गदर्शन तथा दिशा निर्देश मिले। ऐसी हर सम्भावना है कि इस प्रक्रिया में कोई वैकल्पिक नेतृत्व पैदा हो। अनेक बार आहतों से हम समझ नहीं पाते कि कौन आ रहा है लेकिन जब वह आकर हमारे बीच बैठ जाएगा तब उसकी उपेक्षा कौन कर पाएगा ? जैसा कि महारैली के वक्त हुआ। महारैली के पूर्व क्या कोई कह सकता था कि यह इतनी सफल तथा अभुतपूर्व होगी और तो और आयोजकों को भी ऐसा विश्वास नही था कि इतना विशाल जन समर्थन मिलेगा। साथ ही यह भी बात नही कि सत्ता अथवा राजनीतिक दलों एवं उसके नेताओं ने इसे सफल बनाने के लिए बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया हो। हाँ, हतना जरूर है कि उस समय के भाकपा विधायक सतीश कुमार ने अपनी असीम क्षमता का परिचय दिया पर उसमें भी उनका मात्र व्यक्तिगत योगदान रहा न कि उनके दल का। इसी प्रकार झामुमो विधायक सुधीर महतो ने जो व्यक्तिगत दिलचस्पी ली उससे हम सब अवगत हैं। अतएव आज आवश्यकता इस बात की है कि रैली के बाद युवा-शक्ति में आए उफान को सृजनात्मक कार्यो की ओर कैसे मोड़ा जाय, रचनात्मक प्रक्रिया की ओर कैसे पहल की जाय।

संगठन की आवश्यकता

जहाँ तक मेरी समझदारी है यह काम सामाजिक संगठन के माध्यम से

ही सम्भव है । राज्य स्तर पर एक शिखर समिति के गठन के साथ-साथ जिला एवं प्रंखड स्तर पर समितियों का गठन किया जाय जो आपस में समन्वय कर निर्धारित नीतियों एवं कार्यक्रमों के अनुसार कार्य करे । इस प्रक्रिया में युवा शक्ति का उपयोग अत्यन्त कारगर होगा । हाँ, इस प्रक्रिया में एक बात पर अवश्य ध्यान देना होगा कि इस तरह का सामाजिक संगठन राजनीति के टेढ़े-टेढ़े रास्ते से होकर कभी सफल नहीं हो सकता क्योंकि उसके गलियारे बड़े संकीर्ण होते हैं और उन गलियों में स्वार्थ भावना की स्पष्ट झलक मिलती है । अतएव उन संगठनों की पूरी जिम्मेदारी गैरराजनीतिक व्यक्तियों के ही कन्धों पर दी जानी चाहिए ।

बेशक इस बात से इंकार नही किया जा सकता कि राजनीतिक दलों, राजनेताओं तथा राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं का सहयोग आवश्यक है । मेरा आशय है कि उन संगठनों के मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी निश्चित रूप से गैरराजनीतिक हो क्योंकि अभी तक का अनुभव रहा है कि राजनेताओं ने संगठन को अपने हाथों में लेकर मात्र उसे कठपुतली ही बनाया है । कोई कारगर कदम उनसे सम्भव ही नहीं क्योंकि उनका अपना स्वभाव और स्वार्थ उन्हें अपनी ओर खीच ही ले जाएगा, यह कटू सत्य है । किन्तु यह भी सच है कि उनके मार्गदर्शन, परामर्श तथा सहयोग के बिना कोई सामाजिक संगठन चल भी नहीं सकता । इसलिए उनको विश्वास में लेकर चलना होगा, उनके बताए रास्ते पर गौर करना होगा । उनसे निरन्तर संवाद भी बनाए रखना होगा । लेकिन निर्णय और कार्यान्वयन की चाभी अपने हाथ में रखनी होगी ।

संगठन का यह काम जितनी जल्द हो उतना अच्छा । हम अपनी प्राथमिकताएं निर्धारित करें और उसके अनुसार शीघ्र कदम उठाएं क्योंकि समय किसी का इन्तजार नहीं करता । इसलिए अब वह समय आ गया है जब आज की भटक रही दिशाहीन एवं नेतृत्व विहीन युवा पीढ़ी को अभिभावक चाहें तो अपने त्याग व परिश्रम से उन्हें अग्रसर कर संगठन के काम में लगाएं, और उसे गाँव-गाँव, कस्बे-कस्बे तक ले जाएं ताकि शहर और गाँव का आपसी अन्तर मिटाकर समस्त समाज को एक भावना में गूंथा जा सके ।

युवकों के बारे में **रांचे फाँवों कोल्ड** ने लिखा है-

"Youth is a continued intoxication, it is the fever of reason."

युवा शक्ति को मजबुत होना होगा क्योंकि इस युग में might is right की कहावत चरितार्थ है । कमजोर आदमी कुछ नहीं कर सकता हैं । इसकी

शक्ति असीमित है, अपराजेय है । प्रत्येक देश तथा समाज का युवक ही उसकी रीढ़ होता है । उनका समुचित विकास होना अनिवार्य है और साथ ही उन पर विश्वास भी करना होगा इसलिए यदि समाज और देश को विकास के रास्ते पर हम देखना चाहते हैं तो सद्प्रवृत एवं सत्कार्य में रत व्यक्तियों के प्रति सहयोग भाव लाना होगा और अविश्वास और इर्ष्या से मुक्ति पानी होगी, जिस प्रकार अखिल भारतीय कुर्मी महासभा से सम्बद्ध बिहार राज्य कुर्मी सभा के अध्यक्ष डा० मोहन सिंह पर विश्वास करके ही उन्हें महारैली का कोषाध्यक्ष बनाया गया जिनमें समाज के सभी लोगों का अटूट विश्वास और श्रद्धा है ।

प्रभावशाली नेतृत्व की आवश्यकता

समर्थ किन्तु प्रभावशाली नेतृत्व विहीन लव-कुश समाज में केवल भावनात्मक स्तर पर लिए गए संकल्प दूरगामी परिणाम दे सकेंगे, इसमें थोड़ा सन्देह अवश्य दीखता है । क्योंकि यह सत्य है कि आज कुर्मी तथा कुशवाहा दोनों समाज के सदस्यों का वांछित जन समर्थन इसके नेताओं को नहीं मिल पा रहा है । अपनी इसी असमर्थता के कारण यह समाज हर चुनाव में पिटता जा रहा है । नालन्दा तथा भागलपुर इसका ताजा उदाहरण आपके सामने है । फलतः विधान सभा में इसके सदस्यों की संख्या लगातार घटती जा रही है । इस समाज के नेता पिछले सैतालिस सालों से अपने सदस्यों को अपनी अस्मिता तथा राजनैतिक पहचान बनाने के प्रश्न को समझाने में असफल रहें हैं । इस पिछड़े और शासन द्वारा उपेक्षित समाज का समग्र विकास एक ऐतिहासिक आवश्यकता है । राजनैतिक पहचान के बिना इसके सामाजिक और आर्थिक पिछड़ेपन से छुटकारा पाने और इसके विकास की गति तेज करने के लिए आधारभूत संसाधन और सुविधाएं प्राप्त करने का कोई भी अन्य विकल्प नहीं है ।

समाज में आज अनुभवी, दूरदर्शी, प्रभावशाली और भरोसेमन्द नेता नहीं दीख रहें हैं, आज समाज में जो राजनीति कर रहें हैं उनमें न तो समाज के प्रति दर्द और पीड़ा है और न ही समाज में उनकी कोई विशिष्ट छबियां, आकर्षण ही है । यही कारण है आज राजनीति में जातिवाद की भावना का प्रादुर्भाव स्पष्ट दीखने लगा है ।

राजनीतिक पहचान

कुर्मी तथा कुशवाहा समाज भी न केवल अपने मान सम्मान तथा राजनीतिक

पहचान के लिए आज नए पथ पर अग्रसर हो रहा है वरन् अपनी सांस्कृतिक, सामाजिक संवेदनाओं के अनुकूल अपनी व्यवस्था और विकास के रास्ते ढूढ़ रहा है । इस समाज के समक्ष यह समय की सबसे बड़ी चुनौती है कि वह अपनी राजनैतिक पहचान के लिए आसन्न चुनावों में अपनी एकजुटता का परिचय दे और यह तभी सम्भव है जब उसके सदस्य एक दूसरे के प्रति आस्थावान बने तथा अपने उद्देश्यों व संकल्पों को कार्यान्वित करने के लिये दृढ़ प्रतिज्ञ हों ।

आज वे जो अपना ज्यादातर वक्त दूसरों को तिकड़में करके नीचा दिखाने में गुजारते हैं, आपसी द्वेष व इर्ष्या में जो लिप्त हैं, छोटी-छोटी बातों को लेकर जो आपस में उलझे हुए हैं , उससे छुटकारा पाना भी समय की माँग है क्योंकि आपसी टकराव और वैमनस्यता से समाज की तरक्की की जड़ों को खोदने का काम ज्यादा हो रहा है जिससे पूरे समाज को नुकसान हो रहा है ।

क्षेत्र तथा उम्मीदवारों का सही चयन

अभी कुर्मी तथा कुशवाहा दोनों समाज के समक्ष सबसे बड़ा सवाल है कि अगले विधान सभा चुनाव में कैसे ज्यादा-से ज्यादा लोगों को विजयी बनाकर विधान सभा में भेजा जाय । यह काम उतना आसान नहीं जितना समझा जा रहा है किन्तु कुर्मी और कुशवाहा एक साथ मिलकर आपसी समझदारी से तथा अन्य लोगों को भी साथ लेकर चलें तो लक्ष्य तक पहुँचा जा सकता है । इसके लिये दोनों समाज को त्याग तथा संघर्ष करना होगा । जहाँ तक मैं समझता हूँ और महारैली तथा कन्वेंशन में जो विचार छनकर आये हैं उसके आधार पर मैं कह सकता हूँ कि आम लोगों का मन बन चुका है अधिक से अधिक अपने लोगों को विधान सभा में भेजने का । इसके लिए सर्व प्रथम संगठन के माध्यम से उन विधान सभा क्षेत्रों का चयन करना होगा जहाँ इन दोनों समाज के मतदाता का बाहूल्य है । उसके बाद कहाँ कुर्मी मतदाता अधिक हैं और कहाँ कुशवाहा, इसका चयन भी करना आवश्यक होगा । जब इन क्षेत्रों का चयन हो जाएगा तो उम्मीदारों का चयन आवश्यक होगा । हाँ, इस बात का अवश्य ख्याल रखा जाएगा कि जिस क्षेत्र में कुर्मी मतदाता का बाहूल्य है वहाँ उसी समाज के उम्मीदवार का चयन किया जाएगा और जहाँ कुशवाहा समाज के मतदाता अधिक होंगे वहाँ उस समाज के ही उम्मीदवार चुने जाएगें । याद रहे कि विभिन्न राजनीतिक दलों के द्वारा खड़े किए गये उम्मीदवार में से ही समाज के उम्मीदवार का चयन हो । इस चयन का आधार उम्मीदवार होंगे, दल नहीं । उम्मीदवार के चयन में यह सावधानी आवश्यक है कि उनकी

छवि साफ-सुथरी हो तथा सामाजिक मानसिकता के हों । तात्पर्य यह है कि उनके दिल में समाज के प्रति दर्द और पीड़ा हो, सामाजिक प्रतिबद्वता उनकी साफ-सुथरी हो । ऐसा नहीं कि चुनाव जीतने के बाद सिद्धान्त का लबादा अपने सर पर ओढ़ लें और सफेद कूर्ते में दाग लगने का उन्हें भय लगता रहे ।

इस प्रकार जब क्षेत्र तथा उम्मीदवारों का चयन हो जाएगा तो एक परेशानी से और सामना होगा और वह होगा विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा एक ही क्षेत्र में एक ही जाति के उम्मीदवारों को खड़ा करना । यह पहले भी होता आया है और आगे भी होगा । इसमें पिछले दिनों जो गलत्तियाँ हुई हैं वह यह कि इस समाज के उम्मीदवारों का चयन सावधानी से नहीं किया गया । इसका नतीजा हुआ कि हमारे मत का विभाजन हुआ, सभी उम्मीदवारों को थोड़ा-थोड़ा मत मिला और हम पीट गये । इस बार उन गलतियों से सीख लेकर आगे सावधानी बरतनी होगी । इसी में ही प्रखण्ड से लेकर राज्य स्तरीय संगठनों की भूमिका अहम् होगी । काफी छान-बीन तथा ठोक-ठठाकार जिस उम्मीदवार का चयन किया जाएगा, उसका फरमान जारी कर युवकों तथा मतदाताओं को दिशा निर्देश देना होगा । क्षेत्र के अमूक उम्मीदवार ही अधिकृत हैं यह पहले ही संगठन के द्वारा तय हो जाना चाहिए । यदि यह सही तरीके से तय हो जाता है तो इस फरमान को अमली जामा पहनाने का काम तथा उसे साकार करने का काम इस बार के युवा एवं छात्र समुदाय करेंगे ही, ऐसा मेरा विश्वास है क्योंकि इस बार किसी भी कीमत में वे अवसर खोना नहीं चाहते । उसके प्रत्येक सदस्य कमर कसकर खड़े हैं इसे कार्यान्वित करने के लिए ।

लेकिन मजे की बात यह है कि इसकी इसी शक्ति का आंतक इसके कथित मित्र बने अन्य समाज को अधिक है और वे इससे भयभीत भी हैं । यही कारण हैं कि इस कुर्मी-कुशवाहा समाज को बड़ी सावधानी से कदम आगे बढ़ाना है । मसलन जोश और होश को हमेशा साथ रखना है ।

भीतर की गुलामी पर कड़ी नजर

जिस गुलामी की जंजीर को तोड़ने के लिए अतीत में लव-कुश समाज के लोगों ने कुर्बानी दी, आज पुनः उसी गुलामी की जंजीरों में वे फंसते चले जा रहे हैं । आज हमारे देश के अन्दर कई तरह की गुलामियां चल रही हैं - जाति की गुलामी, पूंजी की गुलामी, सामंत की गुलामी, रूढ़ियों की गुलामी, भाषा की गुलामी लेकिन इन गुलामियों से छुटकारा दिलाने हेतु कोई राजनीतिक नेता सामने

आते नहीं बल्कि ज्यादातर नेता अपने कार्यकर्त्ताओं के साथ स्वयं भी ऐसा वर्ताव करते हैं जैसा गुलामों के साथ किया जाता है । फिर स्पष्ट है कि गुलामियों के विरूद्व आर्तनाद की आवाज उठाने वाली राजनीति की विश्वसनीयता बहुत कम है और उसका लोक प्रवेश तो और भी बहुत कम है तथा इस बात का कोई भरोसा नहीं है कि सत्तारूढ़ होने पर इस समाज की राजनीति भी वर्त्तमान व्यवस्था के तहत उन्हीं गुलामी की जंजीरो में जकड़ी जाएगी और लोगों की समस्याएं जस-की-तस पड़ी रह जाएगी ।

भारतीय जनता के साथ कुर्मी तथा कुशवाहा समाज के लोग भी अपनी आँखों से यह देखते हैं और नेताओं के बयानों को जांचतें है क्योंकि इस समाज के लोग पढे-लिखे होने के कारण इस सन्दर्भ में ज्यादा संवेदशील हैं । इसलिए वे अनुभव करते हैं कि गुलामी उनके भीतर भी है । तब एक ही उपाय बच जाता है कि वे अपने नेताओं को ठोक-ठठा लें, उम्मीदवारों के चयन में भी वे इस बात का ध्यान रखें कि आखिर वे इसी गुलामी की मानसिकता से तो नहीं घिरे हैं ? अकेला आदमी कमजोर हो सकता है लेकिन सामाजिक आदमी को अपनी कमजोरियों पर काबू रखना ही होगा ।

इसके लिए आज आवश्यकता इस बात की है समाज के सब लोग एकजुट हो जायं और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करें और इसमें मध्य वर्ग ही पहल कर सकता है क्योंकि किसी भी समाज का मध्य वर्ग, खुशहाल तबका ही उस समाज के संघर्ष का नेतृत्व करता है । स्वाधीनता संघर्ष के नायक भी मध्य और उच्च वर्ग के लोग ही थे । अभी भी समाज में कोई चेतना की अगुआई तथा संघर्ष का आह्वान मध्यवर्ग तथा खुशहाल तबका ही कर पा रहा है । पिछले दिनों की महारैली भी इस बात का प्रत्यक्ष गवाह है कि अधिकतर मध्य वर्ग तथा खुशहाल तबका के लोगों ने ही इसका नेतृत्व किया । इसके लिए युवा-शक्ति को ही आगे बढ़ना होगा क्योंकि वे ही हमारे भविष्य हैं और उन्हीं पर हमारें सपनों का सार्थक होना, न होना निर्भर करता है ।

कमजोरियों पर विजय पाना

आज के बदलते युग में कोई हीन भावना से ग्रस्त होने की गुंजाइश नहीं है । अपने आहत स्वाभिमान की रक्षा के लिए हमें भूत का सहारा न लेकर भविष्य के नव निर्माण की आवश्यकता है । समृद्वशाली और चरित्रवान समाज का निर्माण सच्चे विश्वासों और सही आदर्शो की नींव पर ही किया जा सकता

है । आज हमें अपने सांस्कृतिक थाती तथा सामाजिक कमजोरियों का पुनर्वलोचन करके जो कुछ भी गलत हैं उसे बगैर मोह के त्याग देना होगा । पुरानी कमजोरियों पर लीपा-पोती करने से काम नहीं चल सकता । तांबे पर सोने का मुलम्मा चढ़ा कर न तो मन को समझाया जा सकता है और न स्थायी रूप से दूसरों को बहकाना संभव है । केवल ठोस वास्तविकता की दीवार ही उठते हुए समाज व राष्ट्र का बोझ संभाल सकती है ।

इस बात को मद्दे नजर रखते हुए समाज में शाखावाद , बाल-विवाह, धार्मिक अंध-विश्वास, रूढ़ियाँ, तिलक-दहेज, विधवा-विवाह बंधन, शादी-विवाह या अन्य ऐसे कुसंस्कारों पर आडम्बर पूर्ण खर्च जैसी सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का सार्थक प्रयास किया जाना आवश्यक है । इसके लिए आज सामाजिक मानसिकता को उद्वेलित कर उसे इन बुराईयों को समूल उखाड़ फेंकने के लिए नवयुवकों को तैयार करने तथा समाज में नव चेतना का संचार करने की आवश्यकता है । संगठन शक्ति के आधार पर यह काम युवा-शक्ति के द्वारा ही संम्भव है क्योंकि इतिहास गवाह है कि जितने महापुरूष विश्व में हुए हैं उन्होंने युवावस्था में ही अपनी युवाशक्ति को संचय कर बहुत कुछ करके समाज और देश का नाम रौशन किया है ।

युवा पीढ़ी दूसरी संस्थाओं में अधिक प्रयत्नशील हैं, समाज में नहीं । इसलिए आज के समाज की दीवारों पर पुरानी पीढ़ी की मान्यताएं गल रहीं हैं । उनकी सड़ान से जो दुर्गन्ध निकल रही है, उसी पर समाज के ठेकेदार अपनी मुहर लगाते जा रहे हैं । बन्द कमरे की सील को तोड़ना होगा, बाहर आकर समाज को स्वच्छ हवा का अहसास कराना होगा । युवक ही अपने अध्ययन - अध्यापन के साथ-साथ समय का उपयोग कर सामाजिक कार्यों में लगा सकते हैं क्योंकि समय और सामुद्रिक लहरें किसी का इन्तजार नहीं करते । दुनिया में एक-से-एक साहसिक कार्य युवकों ने किया है । वह एक ऐसी चिनगारी है जो सामाजिक कुरीतियों और अन्ध विश्वास को क्षण भर में जलाकर राख की ढेर कर सकते हैं । आवश्यकता है सुसंगठित होकर, एक होकर कार्य करने की कला की ।

कवि ने सच ही कहा है कि

"जहाँ जहाँ जूल्मों का गोल
बोल जवानों हल्ला बोल ।"

आज जरूरत है कि कुर्मी समाज का हर नौजवान बढ़कर अपने आस-पास

के अंधेरे को रोशनी में तब्दील करे और हमारे शहीद क्रांतिकारियों के अधूरे सपनों को मूर्त करने में अपनी सक्रिय भागीदारी का साहसिक परिचय प्रस्तुत करे ।

समानधर्मियों से तालमेल

कुर्मी तथा कुशवाहा समाज को इस बात पर विचार करना है कि जब वे सत्ता के शिखर पर पहुँच कर नया बिहार बनाना चाहते हैं तो न केवल दलित, पीड़ित, शोषित तथा अन्य पिछड़े समुदाय को वरन् सवर्ण समुदाय के प्रगतिशीत तथा समान विचार धारा वाले लोगों के साथ भी उनका तालतेल अच्छा हो । यादवों के साथ हो रहे व्यवहार से उन्हें पाठ लेना होगा क्योंकि समय की माँग है कि उचित लचीलापन लाया जाये तथा मनुष्य और मनुष्य के बीच कृत्रिम अवरोध न रहने दिये जाएं । जाहिर है यह परिवर्त्तनशीलता का मामला है और संवेदनाएं क्रमशः ही बदलेगी । निष्कर्ष यह है कि बिहार में पिछड़ी जातियों और दलितों तथा अल्पसंख्यकों के साथ जो नया राजनीतिक समीकरण बन रहा है तथा जिसे प्रगतिशील, क्रांतिकारी एवं लोकतान्त्रिक आदि कदम कहा जा रहा है, उसकी सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियां भी सामने आनी चाहिए । जब वे राजनीतिक सत्ता में पिछड़े तथा दलित की साझेदारी कर सकते हैं तो सामाजिक स्तर पर भी उनके बीच समरसता होंनी चाहिए ।

अतएव सामाजिक न्याय की प्रक्रिया को मजबूत बनाने के लिए जमीन के स्तर पर स्पष्टतः सामाजिक , सांस्कृतिक मेलजोल के साथ-साथ राजनीतिक ताल-मेल का कोई रचनात्मक प्रयत्न अवश्य किया जाना चाहिए । समाज का राजनीतिक रूपान्तरण करने वालों की संवेदना का दायरा विस्तृत नहीं हुआ और पिछड़े समुदायों मे खासकर कुर्मी तथा कुशवाहा समाज की सक्रियता की सीमाएं नहीं टूटी तो जाहिर है कि फिर हमें एक दूसरे आन्दोलन के लिये तैयार रहना होगा । क्योंकि आज हम न केवल सत्ता पर बैठे व्यक्ति का बदलाव चाहते हैं बल्कि समग्र व्यवस्था परिवर्त्तन भी हमारा लक्ष्य है । हाँ, यह बात हो सकती है कि यह हमारा मात्र पड़ाव है मंजिल नहीं । इसलिए हमारा यह प्रयास हो कि हम दूसरी जातियों से न तो पूर्वाग्रह ग्रस्त हों और न ही वैमनस्य भाव से युक्त । हम न तो उनकी घृणा का पात्र बनें और नाही शत्रुता और वैर का आधार । समय बदल रहा है, इसलिए हमें भी अपने में बदलाव लाना है । स्वयं चलें तथा दूसरों को भी साथ लेकर चलें ।

तो आइए, हम अपनी पलायनवादी, आत्मकेन्द्रित और कछुआ प्रवृति को त्याग कर सामाजिक प्रतिबद्धता का जीवन दर्शन अपनाएं और एक नए एवं स्वस्थ समाज की रचना का प्रयास करें । **'कल हमारा है'** इस विश्वास को यह प्रयास ही अंजाम दे सकेगा ।

अंत में मैं यही कहूंगा कि हमारा समाज एक जीवित कौम है और कवि के शब्दों में "जीवित कौम इन्तज़ार नहीं करती" क्योंकि "इन्तजार आदमी को धीरे-धीरे नपुंसक बना देता है ।"

☆❋☆❋☆

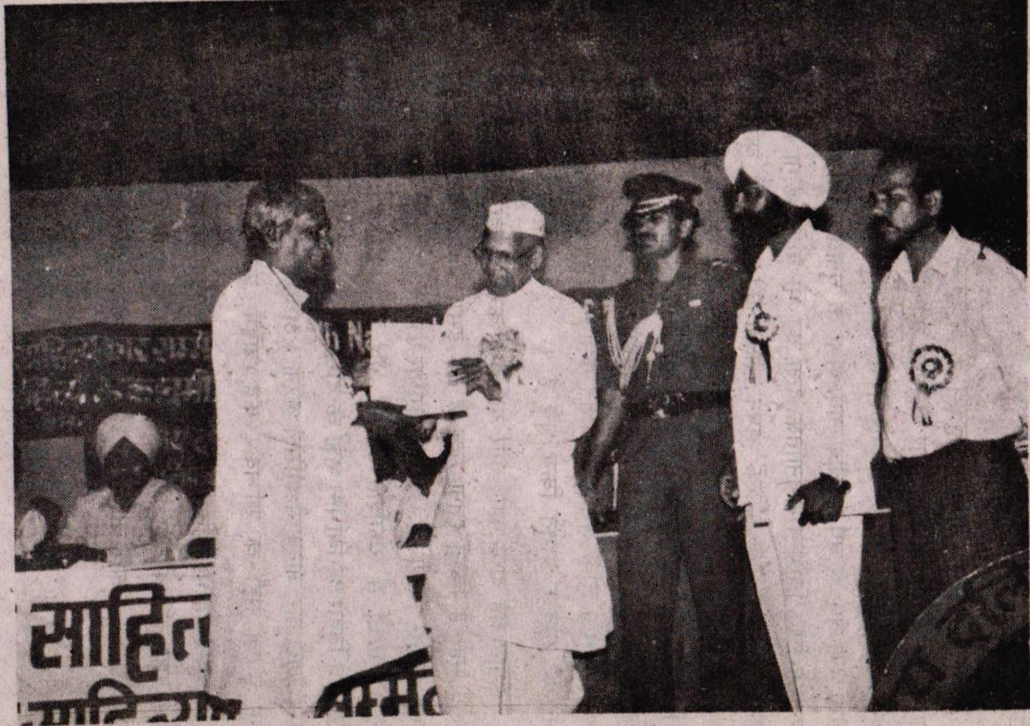

लेखक श्री सिद्धेश्वर को अरूणाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री माता प्रसाद नई दिल्ली के तालकटोरा इनडोर स्टेडियम में विगत 24 सितम्बर, '94 को "डा० अम्बेदकर फेलोशिप" से सम्मानित करते हुए ।

निर्वाचन क्षेत्र एवं लव-कुश मतदाता

पिछले अध्याय में हमने चुनाव के मैदान में उतरे उम्मीदवारों के चयन तथा चुनाव क्षेत्रों की पहचान के बारे में चर्चा की किन्तु यह तभी सम्भव है जब हमें विभिन्न निर्वाचन क्षेत्रों के लव-कुश मतदाताओं की जानकारी हो। आसन्न विधान सभा तथा वर्ष-दो वर्ष के बाद लोक सभा के चुनाव में अधिकाधिक सफलता प्राप्त करने के लिए विभिन्न राजनीतिक दलों को भी बताना होगा कि हमारा दावा कहाँ बनता है। यही नहीं बल्कि अपने नेताओं को भी कुर्मी कुशवाहा बाहूल्य क्षेत्रों से अवगत कराना होगा। किस निर्वाचन क्षेत्र में लव-कुश मतदाताओं की संख्या कितनी है, इसकी जानकारी आवश्यक प्रतीत होती है। क्योंकि जब समर में कुद पड़े हैं तो तैयारी भी अच्छी होनी चाहिए कुछ इसी ख्याल से इस अध्याय में बिहार के विभिन्न लोक सभा एवं विधान सभा निर्वाचन क्षेत्रों के कुर्मी- कुशवाहा मतदाताओं के आँकड़ प्रस्तुत किये गये हैं।

हमारा यह दावा नही और यह दावा कर भी नहीं सकते कि ये आँकड़े शत-प्रतिशत सही है किन्तु इतना सत्य है कि इसमें सही आँकड़े तक पहुँचने का यथा सम्भव प्रयास किया है। इसका आधार रहा है एक तो विभिन्न चुनावों के वक्त पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित आँकड़ें और दूसरा कि सामाजिक गतिविधियों के सिलसिले में बिहार के विभिन्न क्षेत्रों के दौरान राजनीतिक सामाजिक तथा सरकारी सेवकों से पूछताछ कर जानकारी हासिल करना। अतएव वे आँकड़ें approximate या लगभग हैं जो सही के सन्निकट कहे जाएंगे, शत-प्रतिशत सही नहीं।

उद्येश्य यह भी है कि हमारे पाठकों, राजनेताओं, सामाजिक तथा राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं एवं बुद्धिजीवियों को न केवल आँकड़ मानसिक खुराक प्रदान कर पाऐंगे वरन् आगामी चुनाव के समय अपने अधिकारों के लिए लड़ने में सहायक सिद्ध होंगे।

संसदीय निर्वाचन क्षेत्र

क्र.सं.	लोक सभा क्षेत्र	कुल मतदाता	कुर्मी मतदाता	कुशवाहा मतदाता
1.	अररिया	9.17 लाख	75 हजार	65 हजार
2.	आरा	10.69 लाख	60 हजार	1.30 लाख
3.	औरंगाबाद	9.78 लाख	60 हजार	1 लाख
4.	कटिहार	8.63 लाख	70 हजार	80 हजार
5.	किशनगंज	9.63 लाख	62 हजार	60 हजार
6.	कोडरमा	9.68 लाख	1.5 लाख	1.40 लाख
7.	खगड़िया	9.56 लाख	1.25 लाख	1.40 लाख
8.	खूँटी	7.56 लाख	1 लाख	25 हजार
9.	गुमला	7.56 लाख	1 लाख	25 हजार
10.	गोपालगंज	9.48 लाख	1 लाख	1.25 लाख
11.	गिरिडीह	9.55 लाख	2.80 लाख	60 हजार
12.	गया	10.6 लाख	75हजार	1.25 लाख
13.	गोड्डा	9.62 लाख	1 लाख	70 हजार
14.	चतरा	4.5 लाख	50 हजार	1.10 लाख
15.	जहानाबाद	10.67 लाख	1.20 लाख	1.35 लाख
16.	छपरा	9.94 लाख	1.40 लाख	80 हजार
17.	झंझारपुर	9.80 लाख	1.50 लाख	85 हजार
18.	दुमका	8.77 लाख	60 हजार	50 हजार
19.	दरभंगा	10.10 लाख	90 हजार	85 हजार
20.	धनबाद	11.69 लाख	3.75 लाख	45 हजार
21.	नवादा	10.50 लाख	1.50 लाख	50 हजार
22.	नालंदा	11लाख	3.82 लाख	1.5 लाख
23.	पूर्णिया	9.22 लाख	80 हजार	90 हजार
24.	प० सिंहभूम(अ०जा०)	7.6 लाख	1.50 लाख	30 हजार

25.पू० सिंहभूम (जमशेदपूर)	9.70 लाख	3.25 लाख	25 हजार
26. प० चम्पारण (बेतिया)	9.44 लाख	1 लाख	1.40 लाख
27. मोतीहारी	9.39 लाख	80 हजार	90 हजार
28. पलामू(अ०जा०)	9.15 लाख	75 हजार	85 हजार
29. पटना	12.5 लाख	1.50 लाख	1.35 लाख
30. बेगुसराय	9.45 लाख	1.50लाख	30 हजार
31. बलिया	9.84 लाख	1.60 लाख	1.40 लाख
32. बगहा (अ०जा०)	8.75 लाख	75 हजार	85 हजार
33. विक्रमगंज	9.91 लाख	1 लाख	1.60 लाख
34. बांका	9.62 लाख	1.25 लाख	1 लाख
35. बाढ़	10.50 लाख	2.90 लाख	50 हजार
36. भागलपुर	10.50 लाख	2 लाख	75 हजार
37. मधुबनी	9.87 लाख	90 हजार	1.20 लाख
38. महाराजगंज	10.13 लाख	1 लाख	1.30 लाख
39. मधेपुरा	9.82 लाख,	85 हजार	75 हजार
40. मुजफ्फरपुर	9.85 लाख	55 हजार	95हजार
41. मुगेंर	10.29 लाख	1.75 लाख	90 हजार
42. राजमहल(अ०जा०)	8.34 लाख	50 हजार	50 हजार
43. राँची	9.81 लाख	3.85 लाख	50 हजार
44. रोसड़ा	9.90लाख	1.30लाख	1लाख
45. लोहरदगा	9.09लाख	30हजार	50हजार
46. वैशाली	9.66 लाख	95 हजार	1 लाख
47. सासाराम	9.76 लाख	1लाख	1.5लाख
48. सहरसा	9.8लाख	90हजार	1.20लाख
49.. सिवान	9.76 लाख	1.75 लाख	1:10 लाख
50.. सीतामढ़ी	10.16 लाख	95 हजार	90 हजार
51.. समस्तीपुर	10.81 लाख	1 लाख	2 लाख
52.. शिवहर	9.65 लाख	80 हजार	90 हजार
53.. हजारीबाग	10.20 लाख	2.30 लाख	2.40 लाख
54.. हजीपुर(अ०जा०)	9.80 लाख	1.25 लाख	1.15 लाख

बिहार विधान सभा
निर्वाचन क्षेत्र एवं कुर्मी-कुशवाहा मतदाता

क्षेत्र सं०	विधान सभा क्षेत्र का नाम	कुर्मी-कुशवाहा मतदाताओं की संख्या (लगभग)	क्षेत्र सं०	विधान सभा क्षेत्र का नाम	कुर्मी-कुशवाहा मतदाताओं की संख्या (लगभग)
1.	धनहा	45हजार	27.	बसंतपुर	40 हजार
2.	बगहा(अ०जा०)	50 हजार	28.	गोरियाकोठी	58 हजार
3.	रामनगर	32 हजार	29.	सिवान	40 हजार
4.	शिकारपुर(अ०जा०)	10 हजार	30.	मैरवा (अ०जा०)	45 हजार
5.	सिकटा	30 हजार	31.	दरौली	28 हजार
6.	लौरिया	35 हजार	32.	जीरादेई	70 हजार
7.	चनपटिया	50 हजार	33.	महाराजगंज	40 हजार
8.	बेतिया	42 हजार	34.	रघुनाथपुर	40 हजार
9.	नौतन	55 हजार	35.	मांझी	35 हजार
10.	रक्सौल	53 हजार	36.	बनियापुर	40 हजार
11.	सुगौली	46 हजार	37.	मसरख	30 हजार
12.	मोतिहारी	30 हजार	38.	तरैया	35 हजार
13.	आदापुर	48 हजार	39.	मढ़ौरा	30 हजार
14.	ढाका	32 हजार	40.	जलालपुर	35 हजार
15.	घोड़ासाहन	45हजार	41.	छपरा	32 हजार
16.	मधुबन	42हजार	42.	गड़रवा (अ०जा०)	55 हजार
17.	पिपरा (अ०जा०)	35 हजार	43.	परसा	52 हजार
18.	केसरिया	35 हजार	44.	सोनपुर	10 हजार
19.	हरसिद्धि	55 हजार	45.	हाजीपुर	40 हजार
20.	गोविन्दगंज	15 हजार	46.	राघोपुर	30 हजार
21.	कटैया	40 हजार	47.	महनार	40 हजार
22.	भोरे (अ०जा०)	35 हजार	48.	जनदाहा	52 हजार
23.	मीरगंज	40 हजार	49.	पातेपुर(अ०जा०)	48 हजार
24.	गोपालगंज	35 हजार	50.	महुआ(अ०जा०)	48 हजार
25.	बरौली	45 हजार	51.	लालगंज	25 हजार
26.	बैकुंठपुर	50 हजार	52.	वैशाली	48 हजार

191.	शेखपुरा	35हजार
192.	बरबीघा(अ०जा०)	30 हजार
193.	अस्थावाँ	90हजार
194.	बिहार	88 हजार
195.	राजगीर (अ०जा०)	55हजार
196.	नालन्दा	82हजार
197.	इस्लामपुर	85हजार
198.	हिलसा	72हजार
199.	चंडी	80हजार
200.	हरनौत	90हजार
201.	मोकामा	45हजार
202.	बाढ़,	29हजार
203.	बख्तियारपुर	38हजार
204.	फतुहा (अ०जा०)	70हजार
205.	मसौढ़ी	58हजार
206.	पटना पश्चिम	50हजार
207.	पटना केन्द्रीय	48हजार
208.	पटना पूर्वी	52हजार
209.	दानापुर	30हजार
210.	मनेर	45हजार
211.	फुलवारी (अ०जा०)	75हजार
212.	विक्रम	25हजार
213.	पालीगंज	36हजार
214.	संदेश	35हजार
215.	बड़हरा	-
216.	आरा	35हजार
217.	शाहपुर	-
218.	ब्रह्मपुर	-
219.	बक्सर	18हजार
220.	राजपुर	-
221.	डुमरांव	10हजार
222.	जगदीशपुर	52हजार
223.	पीरो	45हजार
224.	सहारा(अ०जा०)	30हजार
225.	काराकाट	40हजार
226.	विक्रमगंज	57हजार
227.	दिनारा	46हजार
228.	रामगढ़	10हजार
229.	मोहनिया (अ०जा०)	50हजार
230.	भभुआ	60हजार
231.	चैनपुर	30हजार
232.	सासाराम	50हजार
233.	चेनारी (अ०जा०)	42हजार
234.	नोखा	51हजार
235.	डेहरी	35हजार
236.	नवीनगर	30हजार
237.	देव (अ०जा०)	30हजार
238.	औरंगाबाद	16हजार
239.	रफीगंज	10हजार
240.	ओबरा	45हजार
241.	गोह	46हजार
242.	अरबल	45हजार
243.	कूर्था	46हजार
244.	मखदूमपुर	48हजार
245.	जहानाबाद	38हजार
246.	घोसी	35हजार
247.	बेलागंज	-
248.	कोंच	-
249.	गया मुफ्फसिल	32हजार
250.	गया टाउन	33हजार
251.	इमामगंज (अ०जा०)	52हजार
252.	गुरूआ	
253.	बोधगया (अ०जा०)	32हजार
254.	बाराचट्टी (अ०जा०)	55हजार
255.	फतेहपुर (अ०जा०)	45हजार
256.	अतरी	-
257.	नवादा	32हजार
258.	रजौली (अ०जा०)	30हजार

259.	गोविन्दपुर	36हजार	292.	जमशेदपुर(प०)	32 हजार
260.	बारसलीगंज	45हजार	293.	ईचागढ़	10हजार
261.	हिसुआ	30हजार	294.	सरायकेला(अ०ज०जा०)	12हजार
262.	कोडरमा	15हजार	295.	चाईबासा(अ०ज०जा०)	15हजार
263.	बरही	11हजार	296.	मझगाँव (अ०ज०जा०)	-
264.	चतरा(अ०जा०)	45 हजार	297.	जगन्नाथपुर(अ०ज०जा०)	-
265.	सिमरिया(अ०जा०)	28हजार	298.	मनोहरपुर(अ०ज०जा०)	15हजार
266.	बड़कागाँव	75हजार	299.	चक्रधरपुर(अ०ज०जा०)	10हजार
267.	रामगढ़	1 लाख	300.	खरसांवा(अ०ज०जा०)	8हजार
268.	माडू	85 हजार	301.	तमाड़ (अ०ज०जा०)	16हजार
269.	हजारीबाग	80हजार	302.	तोरपा	16हजार
270.	बरकट्ठा	55हजार	303.	खूँटी(अ०ज०जा०)	15हजार
271.	राज धनबार	-	304.	सिल्ली	1.15 लाख
272.	बगोदर	19हजार	305.	खिजरी(अ०ज०जा०)	18हजार
273.	जमुआ(अ०जा०)	-	306.	राँची	35हजार
274.	गांडे	-	307.	हटिया	48हजार
275.	गिरीडीह	31हजार	308.	काँके(अ०ज०जा०)	85हजार
276.	डुमरी	85हजार	309.	माण्डर(अ०ज०जा०)	15हजार
277.	गोमियों	75हजार	310.	सिसई (अ०ज०जा०)	10हजार
278.	बेरमो	65हजार	311.	कोलेबिरा(अ०ज०जा०)	15हजार
279.	बोकारो	75 हजार	312.	सिमडेगा(अ०ज०जा०)	17हजार
280.	टुण्डी	55 हजार	313.	गुमला(अ०ज०जा०)	18हजार
281.	बाधमारा	70हजार	314.	विशुनपुर(अ०ज०जा०)	12हजार
282.	सिन्दरी	1.15 लाख	315.	लोहदग्गा(अ०ज०जा०)	15हजार
283.	निरसा	80हजार	316.	लातेहार(अ०जा०)	11हजार
284.	धनबाद	42हजार	317.	मनिका(अ०ज०जा०)	10हजार
285.	झरिया	45हजार	318.	पांकी	60हजार
286.	चन्दनकियारी(अ०जा०)	75 हजार	319.	डाल्टेनगंज	30हजार
287.	बहरागोड़ा	10हजार	320.	गढ़वा	28हजार
288.	घाटशिला(अ०ज०जा०)	95हजार	321.	भवनाथपुर	-
289.	पोटका (अ०ज०जा०)	11हजार	322.	विश्रामपुर	-
290.	जुगसलाई (अ०जा०)	-	323.	छतरपुर(अ०जा०)	-
291.	जमशेदपुर (पुर्वी)	36 हजार	324.	हुसैनाबाद	-

आप स्वयं इन आकड़ों का विश्लेषण करें । वैसे इसके अवलोकन से स्पष्ट है कि कुर्मी और कुशवाहा समाज के लोग यदि आसन्न विधान सभा चुनाव में अपनी एक जुटता का परिचय दें और स्वार्थ से ऊपर उठकर त्याग की भावना से चुनाव लड़ें तो उनके एक सौ प्रतिनिधि निश्चित रूप से विधान सभा में पहुँच सकते हैं जो इस समाज के लिए बहुत बड़ी उपलब्धी होगी । पर उम्मीदवारों के चयन में काफी सावधानी बरतनी होगी तथा दलित, अत्यन्त पिछड़े एवं सवर्ण समुदाय से भी तालमेल करना आवश्यक होगा । लव-कुश के वोट से जहाँ दलित तथा अत्यन्त पिछड़े समुदाय के उम्मीदवार विजय प्राप्त कर सकते हैं वहाँ खुले मन से उनका साथ देना होगा । यही नहीं बल्कि सवर्ण समुदाय के समान विचारधारा वाले उम्मीदवारों के साथ वही वर्ताव करने के लिए अपनी मनोवृति बनानी होगी तभी उनके मतों की अपेक्षा भी की जा सकती है । सत्ता पर काबिज होने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक भी है ।

मुज़फ्फरपुर में रथ-यात्रा का स्वागत ।

सरदार पटेल साहित्य प्रकाशन द्वारा प्रकाशित

श्री सिद्धेश्वर की अन्य रचनाएं

	संशोधित मूल्य
(1) बिहार के कुर्मी - परिचयात्मक निबंध संग्रह	60 रू०
(2) बिहार के कुर्मी - निर्देशिका (संशोधित संस्करण)	60 रू०
(3) आरक्षण (संशोधित संस्करण)	10 रू०
(4) कल हमारा है (चेतना रैली एवं कन्वेंशन का दस्तावेज)	10 रू०
(5) आजादी के सात दीवानें (प्रकाशनाधीन)	10 रू०

पुस्तक प्राप्ति स्थान

(1) एम० आर० पटेल
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1

(2) रामप्रताप सिंह
जय प्रकाश नगर, पटना-गया लाईन
बामान्नी प्रेस के पास, पटना-1

(3) संजय कुमार मंगलम्
नालन्दा कॉमर्सियल इन्स्टिच्यूट के पीछे
धान्दमारी रोड, पटना-20

(4) रामजीवन सिंह
शोषित मुक्ति कार्यालय, सूरत सदष, ए/95
पिपुल्स को ओपरेटीव, पटना-20

) चूल्हन गराई
डंका कूचा, पटना सीटी, पटना-8

) विश्वमोहन प्र० सिंह (गाँधी जी)
नया टोला, पटना-4

7) अयोध्या प्रसाद
गुरसहाय लाल नगर, पटेल नगर, पटना

(8) सुरेन्द्र प्रसाद
सी-16, ए० जी० कॉलोनी, शेखपुरा
पटना-14

(9) सदाशिव प्रसाद
गोपाल पुस्तक भण्डार, खजांची रोड, पटना-4

(10) त्रिपुरारी सिंह
विद्यार्थी पुस्तक भण्डार, गोला रोड
दानापुर कैण्ट, पटना

(11) मिलन पुस्तक भंडार
बैधनाथ भवन के पास, चिरैंयाटाड़, पटना-1

(12) शिव कुमार सिंह, ग्राम-लच्छु बिगहा,
पत्रा०-महानन्दपुर, भाया-नगरनौसा, नालन्दा

(13) दिलिप कुमार सिन्हा
सरस्वती विद्या मंदिर
खन्दक पर, बिहार शरीफ (नालन्दा)

(14) प्रमेश्वर दयाल सिंह
ग्राम - मुरारी, भाया-करपी, जहानाबाद

(15) छोटे लाल सिंह
वरीय सहायक, संस्कृत विभाग
(मगध विश्वविद्यालय), बोध गया

(16) रामसागर मेहता
पेशकार, उपायुक्त कार्यालय, गढ़वा

(17) प्रो दिनेश प्रसाद
आवाद गंज, डालटेन गंज, पलामू

(18) उपेन्द्र सिंह
सी-31, सेटेलाइट कॉलोनी, राँची-4

(19) डॉ० जर्नादन प्र० सिंह
हैनिमन होमियो क्लिनिक एवं
फार्मेसी, इस्लामपुर (नालन्दा)

(20) दिलिप कुमार पटेल
पटेल नगर, रामपुर, नौसहन, वैशाली

(21) चन्द्रभूषण प्र० सिंह
भविष्य निधि कार्यालय, समाहरणालय,
मधेपुरा

(22) कमल किशोर सिंह पटेल
ग्रा०+पत्रा०- सहसी, जिला- खगड़िया

(23) वाई० पी० सिंह
ई-277, मयुर विहार, फेज II, नई दिल्ली -91

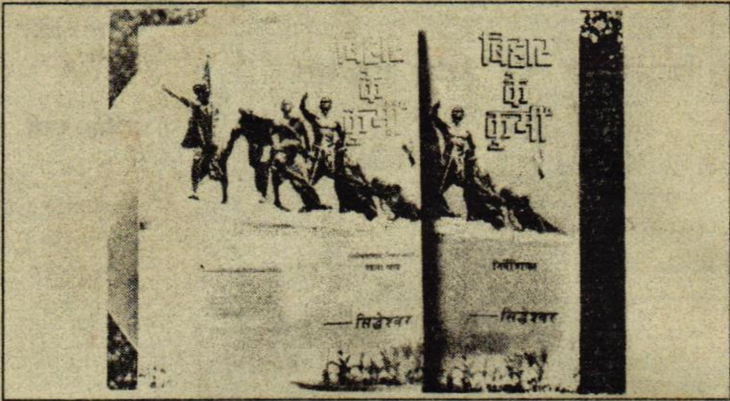

‘बिहार के कुर्मी’

अब मात्र 60 रूपये में

श्री ‘सिद्धेश्वर’

द्वारा सम्पादित निर्देशिका **‘बिहार के कुर्मी’** का संशोधित संस्करण प्रकाशित

125 रूपये की जगह अब मात्र **60 रूपये** में उपलब्ध

साथ ही लेखक की दूसरी पुस्तक

‘बिहार के कुर्मी’ परिचयात्मक निबंध संग्रह

भी अब मात्र **60 रूपये** में उपलब्ध ।

निर्देशिका के संशोधित संस्करण में इस बार समाज के कुछ वैसे प्रबुद्ध एवं सक्रिय जनों का सचित्र जीवन-परिचय भी दिया गया है जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में अपनी एक पहचान बनाई है ।

सर्म्पक करें

एस० आर० पटेल

व्यवस्थापक

दूरभाष -228519

सरदार पटेल साहित्य प्रकाशन

‘बसेरा’, पुरन्दरपुर, पटना-1